सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023
www.newsparivahan.com
परिवहन विशेष
वर्ष 03, अंक 15, नई दिल्ली । बुधवार, 26 मार्च 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार
सच्चाई और अच्छाई की तलाश में पूरी दुनिया घूम लें, अगर वह खुद के अंदर नहीं तो कहीं नहीं

03 यह भ्रष्टाचार और अक्षमता के युग को समाप्त करने वाला बजट : सीएम
06 भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2025 - प्रमुख परिवर्तन और प्रभाव
08 संस्कारशाला : बड़ों की गरिमा और विनम्रता का महत्व

दौड़ेंगी 5000 बसें, प्रदूषण मुक्त होगी दिल्ली
दिल्ली बजट पर सीएम रेखा गुप्ता का ऐलान

संजय बाटला

दिल्ली सरकार ने अपने बजट में परिवहन के लिए 12952 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। इसमें से 5000 नई बसें खरीदी जाएंगी और महिलाओं के लिए मुफ्त बस यात्रा की सुविधा शुरू की जाएगी। बजट 2025-26 पेश करते हुए गुप्ता ने घोषणा की कि राजधानी में सार्वजनिक परिवहन और शहरी गतिशीलता में सुधार के लिए परिवहन क्षेत्र के लिए 12952 करोड़ रुपये निर्धारित किए गए हैं।

नई दिल्ली। दिल्ली की महिलाएं अब बसों में सफर के लिए टिकट के झंझट से बच सकेंगी। सरकार महिलाओं को मुफ्त बस यात्रा का लाभ दिलाने के लिए यात्रा कार्ड जारी करेगी।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा है कि भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने के लिए दिल्ली सरकार मौजूदा पिंक टिकट प्रणाली की जगह महिलाओं के लिए ये मुफ्त बस यात्रा कार्ड जारी करेगी। मुख्यमंत्री ने मंगलवार को बजट में इसकी घोषणा की है।

परिवहन के लिए 12,952 करोड़ रुपये निर्धारित

बजट 2025-26 पेश करते हुए गुप्ता ने घोषणा की कि राजधानी में सार्वजनिक परिवहन और शहरी गतिशीलता में सुधार के लिए परिवहन क्षेत्र के लिए 12,952 करोड़ रुपये निर्धारित किए गए हैं।

उन्होंने कहा कि मुफ़्त बस सेवाओं का उपयोग करने वाली महिलाओं के लिए निर्बाध, भ्रष्टाचार मुक्त अनुभव सुनिश्चित करने के लिए मौजूदा गुलाबी टिकटों की जगह एक नया डिजिटल यात्रा कार्ड आएगा।

उन्होंने कहा कि यह कार्ड मिलने पर महिलाएं कभी भी सार्वजनिक बसों में स्वतंत्र रूप से यात्रा करने के लिए अधिकृत हो जाएंगी। उन्होंने कहा कि बेहतर दक्षता के लिए पूरी प्रणाली को डिजिटल किया जाएगा।

5,000 से अधिक नई बसें होगी शामिल

गुप्ता ने कहा कि हमारा लक्ष्य दिल्ली के सार्वजनिक परिवहन को अधिक सुलभ, विश्वसनीय और वैश्विक रूप से मजबूत बनाना है। उन्होंने बताया कि दिल्ली में वर्तमान में 2,152 इलेक्ट्रिक बसें हैं और 2025-26 तक बेड़े में 5,000 से अधिक नई बसें शामिल की जाएंगी।

गुप्ता ने घोषणा की कि शहर की सार्वजनिक परिवहन प्रणाली को मजबूत करने के उद्देश्य से शहरी परिवहन परियोजनाओं को लागू करने के लिए केंद्र सरकार के समर्थन से 1,000 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। इसके अलावा, दिल्ली मेट्रो के विस्तार के लिए 2,929 करोड़ रुपये अलग रखे गए हैं।

मुख्यमंत्री ने टैक्सी और ऑटो-रिक्शा चालकों के लिए एक कल्याण बोर्ड स्थापित करने की योजना की भी बात की, जो उनकी कामकाजी परिस्थितियों में सुधार और बेहतर सहायता प्रणाली प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करेगा।

इस बीच, 2024-25 के बजट में परिवहन क्षेत्र के लिए दिल्ली सरकार का परिव्यय 9,337 करोड़ रुपये था, जिसमें इस बजट में लगभग तीन हजार करोड़ की वृद्धि हुई है।

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर.एन.आई. द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वींएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

कल के समाचार पत्र में छपी खबर "परिवहन विभाग ने प्रवर्तन शाखा ग्रुप डी और सी कर्मचारियों के लिए 21 मार्च 1997 से आज तक 5वे, 6वें, 7वें वेतन आयोग के अनुसार आर.आर. संशोधन नहीं लागू किया" के लिए परिवहन विभाग ने जारी किया एक आदेश

संजय बाटला

नई दिल्ली। इस आदेश को जारी करने के पीछे कैट द्वारा जारी एक आदेश है जिसका शीर्षक है श्री हरिंदर सिंह बनाम जीएनसीटी ऑफ दिल्ली एवं अन्य। इस आदेश में विभागों ने कैट के आदेश का निपटारा करना बताया है। **आपकी जानकारी हेतु बता दें की परिवहन विभाग के आला अधिकारी द्वारा प्रवर्तन शाखा के कर्मचारियों और अधिकारियों को जो पदोन्नति दी है उसके अंदर शिकायतें ही शिकायतें हैं ओर कानूनी प्रक्रिया के अंतर्गत आरआर लागू नही लिए है** आपकी जानकारी हेतु परिवहन विभाग द्वारा जारी आदेश का हिन्दी रूपांतर प्रस्तुत है, पढ़े और जाने

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार
परिवहन विभागः प्रशासन शाखा
5/9 अंडर हिल रोडः दिल्लीः 110054
(वेबसाइटः http://transport.delhigovt.nic.in)
क्रमांक एफ.4/74/प्रशासन/टीपीटी/2024/1/700
दिनांकः 11/03/25
विषयः ओए संख्या 1361/2021
जिसका शीर्षक है श्री हरिंदर सिंह बनाम जीएनसीटी ऑफ दिल्ली एवं अन्य।
बोलने का आदेश

जबकि, श्री हरिंदर सिंह पुत्र स्वर्गीय श्री टोडा राम इस विभाग में हेड कांस्टेबल (इंफ.) के पद पर कार्यरत हैं। जबकि, उन्हें पैदल कांस्टेबल (इंफ.) के पद पर वेतनमान रु. 775-12-871-14-915-19-1030-20-1150 पर आदेश संख्या एफ.1(5)/94-प्रशासन/टीपीटी/2063-68 दिनांक 04.04.1997 द्वारा 21.03.1997 को नियुक्त किया गया था। जबकि, नियुक्ति आदेश संख्या एफ.1(5)/94-प्रशासन/टीपीटी./2063-68 दिनांक 04.04.1997 को इस सीमा तक संशोधित किया गया था कि अधिकारी को स्वीकृत वेतनमान 775-1150 के स्थान पर 800-1150 रुपए पढ़ा जाए। चूंकि, तदनुसार, आदेश संख्या एफ.पी.एफ./एच-2/एफ.सी./टीपीटी./3584-90 दिनांक 21.09.2004 द्वारा अधिकारी के संशोधित वेतन निर्धारण का आदेश जारी किया गया है। जबकि, आवेदक को दिनांक 12.12.2011 के आदेश संख्या F.9(10)/10/प्रशासन/टीपीटी/8318-30 के तहत 07.10.2010 से हेड कांस्टेबल (इंफ.) के पद पर पदोन्नत किया गया था, उसका वेतन अनजाने में ग्रेड पे 1900/- रुपये (लेवल-2) के साथ तय हो गया था। उसका वेतन 16.10.2017 के MACP आदेश के तहत पुनः निर्धारित/संशोधित किया गया, 01.09.2008 से ग्रेड पे 1900/- रुपये के साथ प्रथम वित्तीय उन्नयन प्रदान किया गया। जबकि, छठे वेतन आयोग की रिपोर्ट के पैरा 7.57.22 के अनुसार ₹7.57.22- दिल्ली सरकार के परिवहन विभाग के ऑपरेशन विंग, प्रदूषण विंग और प्रवर्तन विंग में विभिन्न पदों के लिए उच्च वेतनमान मांगे गए हैं। यह देखा गया है कि इन पदों से जुड़े वर्तमान वेतनमान में कोई विसंगतियां नहीं हैं। इसलिए, इन पदों के संबंध में केवल संबंधित चालू वेतन बैंड और ग्रेड वेतन ही लागू होंगे।₹ जबकि, छठे केन्द्रीय वेतन आयोग की सिफारिश के अनुसार पैदल कांस्टेबल का वेतन वेतन बैंड 1एस 4440-7440 रुपये तथा ग्रेड वेतन 1650 रुपये में संशोधित किया गया है तथा सातवें केन्द्रीय वेतन आयोग के अनुसार पैदल कांस्टेबल का वेतन लेवल-1 के रूप में संशोधित किया गया है। जबकि, आवेदक ने माननीय केंद्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण के समक्ष हरिंदर सिंह बनाम दिल्ली सरकार एवं अन्य शीर्षक से ओ.ए. संख्या 1361/2021 दायर किया और निम्नानुसार प्रार्थना कीः-

परिवहन विभाग ने प्रवर्तन शाखा ग्रुप डी और ग्रुप सी कर्मचारियों के लिए 21 मार्च 1997 से आज तक 5वें, 6वें, 7वें वेतन आयोग के अनुसार आर.आर.संशोधन नही किया

TRANSPORT FOR DELHI
Department of Transport
Government of NCT of Delhi

कल के अंक में प्रकाशित खबर .....

"ए) प्रतिवादियों को एमएसीपी योजना के तहत प्रथम और द्वितीय वित्तीय लाभ प्रदान करने का निर्देश दिया जाए। वेतन बैंड-1 में 1900 रुपये और 2000 रुपये के ग्रेड वेतन के साथ क्रमशः 01.09.2008 और 21.03.2017 से, सभी परिणामी लाभ यानी बकाया आदि के साथ।

(ख) कोई भी आदेश/अनुदान/निर्देश पारित करना जिसे यह माननीय न्यायाधिकरण न्याय के हित में उचित एवं उपयुक्त समझे।₹ जबकि, माननीय कैट ने उक्त ओ.ए. को अनुमति दी और दिनांक 22.07.2021 को आदेश पारित किया, जिसके तहत निम्नानुसार निर्देश दिया गयाः-

"5. पूर्वोक्त के मद्देनजर, गुण-दोष के साथ-साथ सीमाओं पर विचार किए बिना, वर्तमान ओए को प्रतिवादियों को यह निर्देश देते हुए निपटाया जाता है कि वे आवेदक के दिनांक 20.03.2020 के पूर्वोक्त अभ्यावेदन (अनुलग्नक-ए) पर विचार करें और उचित तर्कपूर्ण और स्पष्ट आदेश पारित करके, यथासंभव शीघ्रता से और किसी भी मामले में, इस आदेश की प्रति की तारीख से 10 सप्ताह के भीतर इसका निपटारा करें।"

जबकि, माननीय कैट के दिनांक 22.07.21 के आदेश के अनुसार श्री हरिंदर सिंह, हेड कांस्टेबल (इंफ.) का दिनांक 20.03.2020 का अभ्यावेदन पहले ही निम्नानुसार निपटाया जा चुका हैः- श्री हरिंदर सिंह, हेड कांस्टेबल (प्रवर्तन) को एमएसीपी योजना के तहत प्रथम वित्तीय उन्नयन 01.09.2008 से ग्रेड वेतन 1900/- रुपये के साथ प्रदान किया गया और एमएसीपी योजना के तहत द्वितीय वित्तीय उन्नयन 21.03.2017 से ग्रेड वेतन 2000/- रुपये के साथ वेतन बैंड-1 (7वें वेतन आयोग के अनुसार स्तर-3) में आदेश संख्या एफ.4(327)/2011/एसीपी-एमएसीपी/प्रशासन/टीपीटी/4817-27 दिनांक 17/07/2017 के तहत प्रदान किया गया और उनका वेतन दिनांक 16.10.2017 के आदेश के तहत तय किया गया है। अब, इसलिए, श्री हरिंदर सिंह, हेड कांस्टेबल (इंफ.) के दिनांक 20.03.2020 के अभ्यावेदन का निपटारा कर दिया गया है।

(प्रशांत गोयल)
एसीएस-कम-आयुक्त, परिवहन
दिनांकः 11/03/25
क्रमांक एफ.4/74/प्रशासन/टीपीटी/2024/1/700
जानकारी के लिए प्रतिलिपिः-
1. अपर मुख्य सचिव-सह-आयुक्त, परिवहन विभाग, जीएनसीटी, दिल्ली के निजी सचिव
2. निजी सचिव, एससीओटी (प्रशासन), परिवहन विभाग, दिल्ली सरकार
3. डीसी (प्रशासन) के निजी सचिव, परिवहन विभाग, जीएनसीटी, दिल्ली
4. संबंधित अधिकारी।
5. गार्ड फ़ाइल.
(डॉ. आशुतोष कुमार श्रीवास्तव) उप निदेशक, (प्रशासन)।

क्या होती है एचएसआरपी, क्यों अनिवार्य है वाहनों में उपयोग, बनवाने के लिए किन डॉक्यूमेंट्स का होना है जरूरी

भारत में सड़कों पर हर रोज लाखों वाहनों को चलाया जाता है। इन वाहनों पर एक खास तरह की नंबर प्लेट को लगाया जाता है जिसे HSRP कहा जाता है। सरकार की ओर से वाहनों पर HSRP को क यों अनिवार्य किया है। यह क या होती है (What is HSRP) और इसे बनवाने के लिए किन डॉक यूमेंट्स का होना जरूरी होता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में हर रोज हजारों वाहनों की बिक्री की जाती है। इन वाहनों पर अनिवार्य तौर पर HSRP लगाना होता है। HSRP क्या होती है और क्यों सरकार की ओर से इसे अनिवार्य किया गया है। इसे बनवाने के लिए किस तरह के डॉक्यूमेंट्स की जरुरत होती है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

HSRP को हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट के नाम से भी जाना जाता है। पूरे भारत में वाहनों पर इसी नंबर प्लेट के उपयोग को अनिवार्य (vehicle number plate rules) कर दिया गया है। जिस भी गाड़ी पर HSRP नहीं होगी, ट्रैफिक पुलिस ऐसे वाहन को रोककर चालान कर सकती है।

हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट को एल्यूमिनियम से बनाया जाता है। प्लेट पर बाईं ओर एक होलोग्राम लगाया जाता है इसके अलावा प्लेट पर यूनिक कोड होता है जिसे लेजर कोड कहा जाता है। इनकी खास बात यह है कि होलोग्राम और लेजर कोड के जरिए उस गाड़ी की पूरी जानकारी निकाली जा सकती है। साथ ही इस कोड को प्लेट से हटाया भी नहीं जा सकता।

इस तरह की नंबर प्लेट की सबसे बड़ी खासियत यह होती है कि चोरी होने के बाद वाहन पर ऐसी प्लेट को नहीं लगाया जा सकता है। इसके अलावा अगर वाहन दुर्घटनाग्रस्त हो जाए तो फिर वाहन से जुड़ी पूरी जानकारी ली जा सकती है।

अगर आपके वाहन पर HSRP नंबर प्लेट लगी हुई है तो भी ट्रैफिक पुलिस की ओर से चालान किया जा सकता है। असल में इस प्लेट को रिबिट की सहायता से गाड़ी पर लगाया जाता है, जिससे रिबिट तोड़ने की कोशिश करते हुए यह नंबर प्लेट भी खराब हो जाती है और फिर इसका उपयोग किसी अन्य वाहन में नहीं किया जा सकता। लेकिन कई लोग रिबिट की जगह सामान्य नट का उपयोग कर HSRP को अपने वाहन पर लगाते हैं। ऐसी स्थिति में ट्रैफिक पुलिस की ओर से आपका चालान किया जा सकता है।

इस तरह की प्लेट को सही प्रक्रिया के बाद ही बनवाया जा सकता है। जिसके लिए कुछ डॉक्यूमेंट्स की जरुरत (HSRP documents required) होती है। एचएसआरपी के लिए वाहन का रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट चाहिए होता है। जिसमें वाहन से जुड़ी पूरी जानकारी होती है। इसके अलावा चेसिस नंबर, इंजन नंबर, वाहन के मालिक की पहचान के लिए आधार, वोटर कार्ड जैसे डॉक्यूमेंट्स की जरुरत होती है।

चंचल लेकिन साफ दिल के कर्क राशि के जातक

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक(इंजी)

हमारे नक्षत्र मंडल में पुनर्वसु नक्षत्र से लेकर अश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण तक चंद्रमा का गोचर कर्क राशि में माना गया है। कर्क एक स्त्री जाति की कफ प्रकृति वाली,जल तत्व वाली,रात्रि बली, उत्तर दिशा की स्वामी,समोदय राशि है। कर्क राशि के जातक पर चंद्रमा,गुरु तथा बुध तथा मंगल ग्रह का प्रभाव देखने मिलता है। काल पुरुष की कुंडली में पेट, वक्ष स्थल और गुर्दे का विचार कर्क राशि से किया जाता है।

गुण और स्वभाव : कर्क राशि के लोग गोरे रंग के माध्यम कद काठी के होते हैं। इनका चेहरा लंबा तथा भरा हुआ ,नाक नीची तथा हाथ लंबे होते हैं। कर्क राशि के जातक दयालु,स ंवेदनशील,कल्पनाशील, आध्यात्मिक प्रकृति के होते हैं। यह चंचल मन के अशांत तथा स्वार्थी हो सकते हैं। कर्क राशि के जातक संगीत के काफी शौकीन होते हैं।

इन्हे शास्त्रीय संगीत में रुचि होती है। कर्क के लोग स्त्री या पुरुष के वश में होते हैं। यह कभी कभी चिड़चिड़े,लापरवाह तथा जिद्दी स्वभाव के हो जाते है।

कैरियर : कर्क राशि के लोग कुशल व्यापारी,नौ सेना, हस्तकला, संगीतज्ञ,जल परिवहन,नेतागिरी, सांसद, शास्त्री, मोती, दूध, रासायनिक खाद आदि के व्यापारी, खेलविभाग,रेलवे ,मेडिकल आदि में सफलता प्राप्त करते हैं।

रोग : कर्क राशि के लोगो को गैस,कब्ज,हृदय रोग,कमजोरी, टीबी,
कैंसर,फेफड़ों के रोग,ब्लड प्रेशर आदि रोगों से जूझना पड़ सकता है।

भाग्यशाली दिन : सोम,बुध और गुरु

भाग्यशाली रंग : लाल,पीला और सफेद

भाग्यशाली अंक : 1,4,6,8

शुभ रत्न : मोती

उपाय : कर्क राशि के जातक को सोमवार का व्रत तथा शिव और हनुमान जी की उपासना करना अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है। प्रत्येक सोमवार शिवलिंग पर दूध से अभिषेक करना अच्छा होता है।

हिन्दू नववर्ष पर भगवा ध्वज फहराने के नियम और लाभ

30 मार्च 2025 रविवार के दिन से चैत्र प्रतिपदा अर्थात आगामी हिन्दू नववर्ष 2082 प्रारंभ हो रहा है। इस शुभ अवसर पर घरों के द्वारा पर गुड़ी की पूजा कर उसे द्वार पर लगाते हैं और घर के ऊपर भगवा ध्वज फहराते हैं। यह ध्वज कई कारणों से लगाया जाता है। घर की छत पर लगाने वाले ध्वज रणभूमि में रथ पर लगाने वाले ध्वज दोनों में कुछ फर्क होता है।

1. ध्वज का रंग घर की छत पर तीन रंग में से किसी एक रंग का ध्वज लगते। गेरू और भगवा रंग एक ही है, लेकिन केसरिया में मामूली–सा अंतर है। इसके अलावा तीसरा रंग है पीला।

2. किस दिशा में लगाते हैं ध्वज घर के ऊपर वायव्य कोण में ध्वज लगाते हैं। यदि आपके घर की दिशा भिन्न है तो किसी वास्तु शास्त्री से पूछकर लगाएं।

3. कैसा होना चाहिए ध्वज :– स्वास्तिक या ॐ लगा हुआ केसरिया ध्वज होना चाहिए। दो प्रकार का ध्वज होता है एक त्रिभुजाकार और दूसरा दो त्रिभुजाकार ध्वज। दोनों में से कोई एक प्रकार का ध्वज लगा सकते हैं।

4. क्या होगा :– इससे यश, कीर्ति और विजय मिलती है। ध्वजा लगाने से घर में रहने वाले सदस्यों के रोग, शोक व दोष का नाश होता है और घर की सुख व समृद्धि बढ़ती है।

ग्रहों के सेनापति मंगल की जन्मस्थली श्री मंगलनाथ मंदिर उज्जैन की सम्पूर्ण जानकारी

उज्जयिनी स्थित विश्व प्रसिद्ध श्री मंगलेश्वर मंगलनाथ के बारे में यह जनकथा प्रचलित है कि मंगल ग्रह की उत्पत्ति यहीं से हुई थी। पुराणों के अनुसार उज्जैन नगरी को मंगल की जननी कहा जाता है। देश-विदेश से कई लोग जिनकी कुंडली में मंगल दोष होता है या जिनका मंगल भारी होता है, अपने मंगल दोष निवारण के लिए यहाँ मंगलनाथ भगवान के शिवरूपी लिंग का पूजन-अर्चन करने आते हैं।
पौराणिक आधार एवं महत्व मंगल गृह की उत्पत्ति का वृत्तांत स्कन्द पुराण के अवंतिका खंड में मिलता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार एक समय में उज्जैन में अंधकासुर नाम का प्रसिद्ध दैत्य रहता था। उसके बलशाली पुत्र का नाम कनकदानव था। एक बार कनकदानव ने देवताओं के स्वामी इंद्र को युद्ध के लिए ललकारा। क्रोधित हो इंद्र ने युद्ध में उसका वध कर दिया। कनकदानव का वध कर इंद्र अंधकासुर से भयभीत हो भगवान शंकर की शरण में कैलाश पर्वत की ओर चले गए। वहाँ इंद्र ने भगवान शंकर को अपने भय के बारे में बताया और अनुरोध कर रक्षा मांगी। भगवान शिव ने इंद्र को आश्वस्त किया और अंधकासुर को युद्ध के लिए ललकारा। तब भगवान शिव और अंधकासुर के बीच भीषण संग्राम हुआ। युद्ध के दौरान भगवान शिव के पसीने की एक बूँद पृथ्वी पर गिरी। उससे अंगारे के समान लाल रंग और लाल अंग वाले भूमि पुत्र मंगल उत्पन्न हुए। तब स्वयं शिवजी ने ब्रम्हाजी के साथ मिलकर उन्हें शीतलता प्रदान करने के लिए दही और भात से अभिषेक किया। यही विधान आज भी मंगलनाथ मंदिर में मंगल के अरिष्ट से बचने के लिए देश-विदेश के कई श्रद्धालुओं द्वारा किया जाता है। बाद में अंगारक, रक्ताक्ष तथा महादेव पुत्र, इन नामों से स्तुति कर ब्राह्मणों ने उन्हें ग्रहों के मध्य में प्रतिष्ठित किया। फिर उसी स्थान पर ब्रम्हाजी ने मंगलेश्वर नामक उत्तम शिवलिंग की स्थापना की जो आज विश्व में मंगलनाथ, उज्जैन के नाम से प्रसिद्ध है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार भगवान शंकर ने ही मंगल देव को ग्रहों का सेनापति नियुक्त किया और अवंतिका में निवास कर लोगों का मंगल करने का अनुरोध किया।
ज्योतिषीय महत्व एवं मंगल दोष निवारण उपायः ज्योतिषियों के अनुसार मृगशीश, चित्रा और धनिष्ठा नक्षत्रों

का स्वामित्व मंगल को ही प्राप्त है। कर्क एवं सिंह लग्न की कुंडली में ये विशेष कारक माने जाते हैं। इसके अलावा मिथुन तथा कन्या लग्न की कुंडली में भी यह विशेष कारक माने जाते हैं। मंगल ग्रह की क्रुद्धता के कारण ही वर-वधु की कुंडली में मंगल का मिलान आवश्यक माना गया है। ज्योतिषीय महत्वानुसार मंगल ग्रह की शान्ति के लिए शिव उपासना तथा मूंगा रत्न धारण करने का विधान है। मंगल दोष निवारण के लिए सरल व अचूक उपाय है मंगल ग्रह की भात पुजा। भात पुजा करने के लिए भगवान मंगल देव को दहीं, दुध, घी, शहद, शक्कर, अश्वगंध एवं भांग से स्नान करवाया जाता है और मंगल स्त्रोत का पाठ किया जाता है। उसके बाद पके हुए चावल को ठंडा करके उसमें पंचामृत मिला कर मंगलेश्वर शिवलिंग को चढ़ाया जाता है।
भात पूजन पुरे साल के बारह मास में कभी भी सुबह 6 बजे से दोपहर 3 बजे तक करवाया जा सकता है। मान्यतानुसार इस पूजन से मंगल देव को शीतलता मिलती है और मंगल दोष का निवारण होता है।
मंदिर संरचना एवं इतिहास मंगलनाथ मंदिर विश्व के अति प्राचीन स्थानों में से एक है। मंदिर का पुनर्निर्माण मराठा काल में हुआ था। मंगलनाथ मंदिर में मंगल देव के अलावा भुवनेश्वरी माता, श्री गणेशजी, दक्षिणमुखी हनुमानजी, सौभाग्येश्वरी देवीजी और पंचमुखी महादेव का मंदिर भी स्थित है।
कैसे पहुंचा जाये? मंगलनाथ पहुँचने के लिए निजी वाहन के अलावा टैक्सी सेवाएं भी उपलब्ध है। इसके साथ ही उज्जैन दर्शन बस द्वारा भी मंगलनाथ दर्शन के लिए आया जा सकता है।

।।जय श्री महामंगल।।

पर्पल डे (बैंगनी दिवस)

दुनिया भर में मिर्गी के बारे में जागरूकता बढ़ाना है इस दिवस का उद्देश्य पर्पल डे एक जमीनी स्तर का उत्सव है जिसका उद्देश्य दुनिया भर में मिर्गी के बारे में जागरूकता बढ़ाना है, एक ऐसी स्थिति जो दुनिया भर में 65 मिलियन से अधिक लोगों को प्रभावित करती है। एक न्यूरोलॉजिकल स्थिति के रूप में जो दौरे का कारण बनती है और अक्सर बचपन में शुरू होती है, मिर्गी को कभी-कभी गलत समझा जाता है जिससे सामाजिक स्थितियों में कठिनाई हो सकती है। पर्पल डे का विचार उन लोगों को शिक्षा प्रदान करना है जो इस स्थिति को नहीं समझते हैं, साथ ही उन लोगों के लिए भी जिन्हें मिर्गी है ताकि वे पहचान सकें कि वे अकेले नहीं हैं क्योंकि लैवेंडर मिर्गी के लिए अंतर्राष्ट्रीय रंग है और यह एक ऐसा रंग भी है जो एकांत का प्रतीक है, इसलिए यह उचित ही था कि मान्यता और जागरूकता के इस महत्वपूर्ण दिन के लिए बैंगनी रंग को ही चुना जाए!

पर्पल डे कैसे मनाएं? इस दिन को मनाना न केवल मज़ेदार है, बल्कि इस चुनौतीपूर्ण तंत्रिका संबंधी विकार के बारे में जागरूकता बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण है। इन विचारों को आज़माएँ या इस कारण की मदद करने के लिए दूसरों के विचारों के साथ रचनात्मक बनें:

बैंगनी पहनें जाहिर है, पर्पल डे के जश्न को मनाने के लिए सबसे आसान कामों में से एक है अलमारी से कुछ बैंगनी रंग का कपड़ा निकालना और उसे पहनना। बैंगनी रंग की शर्ट, ड्रेस, पैंट या टोपी निश्चित रूप से काम आएगी। या सिर से पैर तक बैंगनी रंग के कपड़े पहनने की कोशिश करें! बैंगनी आईशैडो, बैंगनी फेस ग्लिटर या बैंगनी लिपस्टिक के साथ बॉक्स से बाहर कदम रखने पर विचार करें। जो लोग इस कारण के लिए अधिक प्रतिबद्ध हैं, उनके लिए बैंगनी हेयर डाई बहुत बड़ा प्रभाव डाल सकती है।

जो लोग इस दिन आधिकारिक बैंगनी टी-शर्ट पहनकर जश्न मनाना चाहते हैं, वे आधिकारिक वेबसाइट पर पर्पल डे टी-शर्ट प्राप्त कर सकते हैं।

पर्पल डे कार्यक्रम का आयोजन करें पर्पल डे के समर्थन में एक विशेष कॉफी मॉर्निंग की मेज़बानी करें, एक क्विज़ नाइट का आयोजन करें या एक मर्डर मिस्ट्री इवनिंग का आयोजन करें। (ये सभी व्यक्तिगत रूप से या वर्चुअल रूप से किए जा सकते हैं।) यूके की एपिलेप्सी सोसाइटी जागरूकता कार्यक्रम के लिए दोस्तों, परिवार और सहकर्मियों को इकट्ठा करने के लिए उपयोग में आसान संसाधन प्रदान करती है। अधिक रचनात्मक विचारों के लिए, विचार करें कि लोगों ने पर्पल डे के समर्थन में अतीत में क्या किया है। कुछ लोगों ने अपने बालों को बैंगनी रंग से रंगकर, अपने सिर को पूरी तरह से मुंडवाकर, 1000 सीढ़ियाँ चढ़कर या महीने के लिए अपनी पसंदीदा चीज़ को त्यागकर चैरिटी के लिए धन जुटाया है। दूसरों ने मिर्गी से पीड़ित लोगों के लिए जागरूकता बढ़ाने के लिए एक मजेदार दौड़, पैदल यात्रा या साइकिल (26 मील 26 तारीख को एकदम सही है!) का आयोजन किया है। वैकल्पिक रूप से, बैंगनी रंग के कपड़े पहनें और ईएएनएस, अनीता कॉफमैन फाउंडेशन या मिर्गी जागरूकता का समर्थन करने वाली किसी अन्य चैरिटी की सहायता के लिए बैंगनी थीम पर धन जुटाने का कार्यक्रम आयोजित करें।

क्या आपको पता है 56 (छप्पन) भोग क्यों लगाए जाते हैं ?

भगवान को लगाए जाने वाले भोग की बड़ी महिमा है। इनके लिए 56 प्रकार के व्यंजन परोसे जाते हैं, जिसे छप्पन भोग कहा जाता है।यह भोग रसगुल्ले से शुरू होकर दही, चावल, पूरी, पापड़ आदि से होते हुए इलायची पर जाकर खत्म होता है। अष्ट पहर भोजन करने वाले बालकृष्ण भगवान को अर्पित किए जाने वाले छप्पन भोग के पीछे कई रोचक कथाएं हैं। ऐसा भी कहा जाता है कि यशोदाजी बालकृष्ण को एक दिन में अष्ट पहर भोजन कराती थी। अर्थात... बालकृष्ण आठ बार भोजन करते थे।जब इंद्र के प्रकोप से सारे व्रज को बचाने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को उठाया था, तब लगातार सात दिन तक भगवान ने अन्न जल ग्रहण नहीं किया।आठवे दिन जब भगवान ने देखा कि अब इंद्र की वर्षा बंद हो गई है, सभी व्रजवासियो को गोवर्धन पर्वत से बाहर निकल जाने को कहा, तब दिन में आठ प्रहर भोजन करने वाले व्रज के नंदलाल कन्हैया का लगातार सात दिन तक भूखा रहना,उनके व्रज वासियों और मया यशोदा के लिए बड़ा कष्टप्रद हुआ। भगवान के प्रति अपनी अनन्य श्रद्धा भक्ति भाव दिखाते हुए सभी। ब्रजवासियो सहित यशोदा मैया ने 7 दिन और अष्ट प्रहर के हिसाब से 7 X 8= 56 व्यंजनो का भोग बाल कृष्ण को लगाया।

गोपिकाओं ने भेंट किए छप्पन भोग श्रीमद्भागवत के अनुसार, गोपिकाओं ने एक माह तक यमुना में भोर में ही न केवल स्नान किया, अपितु कात्यायनी मां की अर्चना भी इस मनोकामना से की, कि उन्हें नंदकुमार ही पति रूप में प्राप्त हों।श्रीकृष्ण ने उनकी मनोकामना पूर्ति की सहमति दे दी। व्रत समाप्ति और मनोकामना पूर्ण होने के उपलक्ष्य में ही उद्यापन स्वरूप गोपिकाओं ने छप्पन भोग का आयोजन किया।

छप्पन भोग हैं छप्पन सखियां ऐसा भी कहा जाता है कि गौलोक में भगवान श्रीकृष्ण राधिका जी के साथ एक दिव्य कमल पर विराजते हैं।उस कमल की तीन परतें होती हैं।

प्रथम परत में ₹आठ₹, दूसरी में ₹सोलह₹ और तीसरी में ₹बत्तीस पंखुड़िया₹ होती हैं।

प्रत्येक पंखुड़ी पर एक प्रमुख

सखी और मध्य में भगवान विराजते हैं। इस तरह कुल पंखुड़ियों संख्या छप्पन होती है।

56 संख्या का यही अर्थ है।

56 (छप्पन) भोग इस प्रकार है :-

1. भक्त (भात),
2. सूप (दाल),
3. प्रलेह (चटनी),
4. सदिका (कढ़ी),
5. दधिशाकजा (दही शाक की कढ़ी),
6. सिखरिणी (सिखरन),
7. अवलेह (शरबत),
8. बालका (बाटी),
9. इक्षु खेरिणी (मुरब्बा),
10. त्रिकोण (शर्करा युक्त),
11. बटक (बड़ा),
12. मधु शीर्षक (मठरी),
13. फेणिका (फेनी),
14. परिष्टश्च (पूरी),
15. शतपत्र (खजला),
16. सधिद्रक (घेवर),
17. चक्राम (मालपुआ),
18. चिल्डिका (चोला),
19. सुधाकुंडलिका (जलेबी),
20. धृतपूर (मेसू),
21. वायुपूर (रसगुल्ला),
22. चन्द्रकला (पगी हुई),
23. दधि (महारायता),
24. स्थूली (थूली),
25. कर्पूरनाड़ी (लौंगपूरी),
26. खंड मंडल (खुरमा),
27. गोधूम (दलिया),
28. परिखा,
29. सुफलाढया (सौंफ युक्त),
30. दधिरूप (बिलसारू),
31. मोदक (लड्डू),
32. शाक (साग),
33. सौधान (अधानौ अचार),
34. मंडका (मोठ),
35. पायस (खीर)
36. दधि (दही),
37. गोघृत,
38. हैयंगपीनम (मक्खन),
39. मंडूरी (मलाई),
40. कूपिका (रबड़ी),
41. पर्पट (पापड़),
42. शक्तिका (सीरा),
43. लसिका (लस्सी),
44. सुवत,
45. संघाय (मोहन),
46. सुफला (सुपारी),
47. सिता (इलायची),
48. फल,
49. तांबूल,
50. मोहन भोग,
51. लवण,
52. कषाय,
53. मधुर,
54. तिक्त,
55. कटु,
56. अम्ल

जय हो सत्य सनातन

लीवर की बीमारी के उपाय

आज कल चारो और लीवर के मरीज हैं, किसी को पीलिया हैं, किसी का लीवर सूजा हुआ हैं, किसी का फैटी हैं और डॉक्टर बस नियमित दवाओ पर चला देते हैं मरीज को। मगर आराम किसी को मुश्किल से ही आते देखा हैं। लीवर हमारे शरीर का सबसे मुख्य अंग है यदि आपका लीवर ठीक प्रकार से कार्य नहीं कर पा रहा है तो समझिये कि खतरे की घंटी बज चुकी है। लीवर की खराबी के लक्षणों को अनदेखा करना बड़ा ही मुश्किल है और फिर भी हम उसे जाने अंजाने अनदेखा कर ही देते हैं। लीवर की खराबी होने का कारण ज्यादा तेल खाना, ज्यादा शराब पीना और कई अन्य कारणों के बारे में तो हम जानते ही हैं। हालाकि लीवर की खराबी का कारण कई लोग जानते हैं पर लीवर जब खराब होना शुरु होता है तब हमारे शरीर में क्या क्या बदलाव पैदा होते हैं यानी की लक्षण क्या हैं, इसके बारे में कोई नहीं जानता। वे लोग जो सोचते हैं कि वे शराब नहीं पीते तो उनका लीवर कभी खराब नहीं हो सकता तो वे बिल्कुल गलत हैं। क्या आप जानते हैं कि मुंह से गंदी बदबू आना भी लीवर की खराबी हो सकती है। क्यों चौंक गए ना? हम आपको कुछ परीक्षण बताएंगे जिससे आप पता लगा सकते हैं कि क्या आपका लीवर वाकई में खराब है। कोई भी बीमारी कभी भी चेतावनी का संकेत दिये बगैर नहीं आती, इसलिये आप सावधान रहें। मुंह से बदबू यदि लीवर सही से कार्य नही कर रहा है तो आपके मुंह से गंदी बदबू आएगी। ऐसा इसलिये होता है क्योकि मुंह में अमोनिया ज्याद रिसता है। लीवर खराब होने का एक और संकेत है कि स्किन क्षतिग्रस्त होने लगेगी और उस पर थकान दिखाई पडने लगेगी। आंखों के नीचे की स्किन बहुत ही नाजुक होती है जिस पर आपकी हेल्थ का असर साफ दिखाई पड़ता है। पाचन तंत्र में खराबी यदि आपके लीवर पर वसा जमा हुआ है और या फिर वह बड़ा हो गया है, तो फिर आपको पानी भी नहीं हजम होगा। त्वचा पर सफेद धब्बे यदि आपकी त्वचा का रंग उड गया है और उस पर सफेद रंग के धब्बे पड़ने लगे हैं तो इसे हम लीवर स्पॉट के नाम से बुलाएंगे। यदि आपकी पेशाब या मल हर रोज़ गहरे रंग का आने लगे तो लीवर गड़बड़ है। यदि ऐसा केवल एक बार होता है तो यह केवल पानी की कमी की वजह से हो सकता है। यदि आपके आंखों का सफेद भाग पीला नजर आने लगे और नाखून पीले दिखने लगे तो आपको जौनडिस हो सकता है। इसका यह मतलब होता है कि आपका लीवर संक्रमित है। लीवर एक एंजाइम पैदा करता है जिसका नाम होता है बाइल जो कि स्वाद में बहुत खराब लगता है। यदि आपके मुंह में कडुआहर लगे तो इसका मतलब है कि आपके मुंह तब बाइल पहुंच रहा है। जब लीवर बड़ा हो जाता है तो पेट में सूजन आ जाती है, जिसको हम अक्सर मोटापा समझने की भूल कर बैठते हैं।

मानव पाचन तंत्र में लीवर एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। विभिन्न अंगों के कार्यों जिसमें भोजन चयापचय, ऊर्जा भंडारण, विषाक्त पदार्थों को बाहर निकलना, डिटॉक्सीफिकेशन, प्रतिरक्षा प्रणाली का समर्थन और रसायनों का उत्पादन शामिल हैं। लेकिन कई चीजें जैसे वायरस, दवाएं, आनुवांशिक रोग और शराब लिवर को नुकसान पहुंचाने लगती है। लेकिन यहां दिये उपायों को अपनाकर आप अपने लीवर को मजबूत और बीमारियों से दूर रख सकते हैं। करें यह कुछ घरेलू उपाय हल्दी लीवर के स्वास्थ्य में सुधार करने के लिए अत्यंत उपयोगी होती है। इसमें एंटीसेप्टिक गुण मौजूद होते है और एंटीऑक्सीडेंट के रूप में कार्य करती है। हल्दी की रोगनिरोधन क्षमता हैपेटाइटिस बी व सी का कारण बनने वाले वायरस को बढ़ने से रोकती है। इसलिए हल्दी को अपने खाने में शामिल करें या रात को सोने से पहले एक गिलास दूध में थोड़ी सी हल्दी मिलाकर पिएं। सेब का सिरका, लीवर में मौजूद विषैले पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है। भोजन से पहले सेब के सिरके को पीने से शरीर की चर्बी घटती है। सेब के सिरके को आप कई तरीके से इस्तेमाल कर सकते हैं- एक गिलास पानी में एक चम्मच सेब का सिरका मिलाएं, या इस मिश्रण में एक चम्मच शहद मिलाएं। इस मश्रिण को दिन में दो से तीन बार लें। आंवला विटामिन सी के सबसे संपन्न स्रोतों में से एक है और इसका सेवन लीवर की कार्यशीलता को बनाये रखने में मदद करता है। अध्ययनों ने साबित किया है कि आंवला में लीवर को सुरक्षित रखने वाले सभी तत्व मौजूद हैं। लीवर के स्वास्थ्य के लिए आपको दिन में 4-5 कच्चे आंवले खाने चाहिए। पपीता लीवर की बीमारियों के लिए सबसे सुरक्षित प्राकृतिक उपचार में से एक है, विशेष रूप से लीवर सिरोसिस के लिए। हर रोज दो चम्मच पपीता के रस में आधा चम्मच नींबू का रस मिलाकर पिएं। इस बीमारी से पूरी तरह निजात पाने के लिए इस मिश्रण का सेवन तीन से चार सप्ताहों के लिए करें। सिंहपर्णी जड़ की चाय लीवर के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाले उपचारों में से एक है। अधिक लाभ पाने के लिए इस चाय को दिन में दो बार पिएं। आप चाहें तो जड़ को पानी में उबाल कर, पानी को छान कर पी सकते हैं। सिंहपर्णी की जड़ का पाउडर बड़ी आसानी से मिल जाएगा। लीवर की बीमारियों के इलाज के लिए मुलेठी का इस्तेमाल कई आयुर्वेदिक औषधियों में किया जाता है। इसके इस्तेमाल के लिए मुलेठी की जड़ का पाउडर बनाकर इसे उबलते पानी में डालें। फिर ठंड़ा होने पर छान लें। इस चाय रुपी पानी को दिन में एक या दो बार पिएं। फीटकोंस्टीटूएंट्स की उपस्थिति के कारण, अलसी के बीज हार्मोन को ब्लड में घूमने से रोकता है और लीवर के तनाव को कम करता है। टोस्ट पर, सलाद में या अनाज के साथ अलसी के बीज को पीसकर इस्तेमाल करने से लिवर के रोगों को दूर रखने में मदद करता है। एवोकैडो और अखरोट को अपने आहार में शामिल कर आप लीवर की बीमारियों के आक्रमण से बच सकते हैं। एवोकैडो और अखरोट में मौजूद ग्लुटथायन, लिवर में जमा विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालकर इसकी सफाई करता है। पालक और गाजर का रस का मिश्रण लीवर सिरोसिस के लिए काफी लाभदायक घरेलू उपाय है। पालक का रस और गाजर के रस को बराबर भाग में मिलाकर पिएं। लीवर की मरम्मत के लिए इस प्राकृतिक रस को रोजाना कम से कम एक बार जरूर पिएं। सेब और पत्तेदार सब्जियों में मौजूद पेक्टिन पाचन तंत्र में उपस्थित विषाक्त पदार्थों को बाहर निकाल कर लीवर की रक्षा करता है। इसके अलावा, हरी सब्जियां पित्त के प्रवाह को बढ़ाती हैं। एक पौधा और है जो अपने आप उग आता है , जिसकी पत्तियां आंवले जैसी होती है. इन्ही पत्तियों के नीचे की ओर छोटे छोटे फुल आते है जो बाद में छोटे छोटे आंवलों में बदल जाते है . इसे भुई आंवला कहते है. इस पौधे को भूमि आंवला या भू- धात्री भी कहा जाता है .यह पौधा लीवर के लिए बहुत उपयोगी है.इसका सम्पूर्ण भाग , जड़ समेत इस्तेमाल किया जा सकता है.तथा कई बाज़ीगर भुई आंवला के पत्ते चबाकर लोहे के ब्लेड तक को चबा जाते हैं . ये यकृत (लीवर) की यह सबसे अधिक प्रमाणिक औषधि है . लीवर बढ़ गया है या उसमे सूजन है तो यह पौधा उसे बिलकुल ठीक कर देगा . बिलीरुबिन बढ़ गया है , पीलिया हो गया है तो इसके पूरे पढ़े को जड़ों समेत उखाडकर , उसका काढ़ा सुबह शाम लें . सूखे हुए पंचांग का 3 ग्राम का काढ़ा सवेरे शाम लेने से बढ़ा हुआ बाईलीरुबिन ठीक होगा और पीलिया की बीमारी से मुक्ति मिलेगी।

महिलाओं को समृद्धि, छात्रों को लैपटॉप, 5 रुपये में खाना... भाजपा सरकार के पहले बजट की 10 बड़ी बातें

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता आज विधानसभा में वित्त वर्ष 2025-26 के लिए बजट पेश कर रही हैं। यह 27 सालों बाद दिल्ली में भाजपा सरकार द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा पहला बजट है। सीएम ने अपने भाषण में कहा कि यह बजट बुनियादी ढांचे शिक्षा स्वास्थ्य सेवा परिवहन और प्रदूषण नियंत्रण जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करता है।

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने मंगलवार को विधानसभा में वित्त वर्ष 2025-26 के लिए बजट पेश कर रही हैं। बता दें 27 सालों बाद दिल्ली में भाजपा की सरकार द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा पहला बजट है। सीएम ने अपने भाषण में कहा कि दिल्ली की जनता के लिए इस बजट में बुनियादी ढांचे, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, परिवहन और प्रदूषण नियंत्रण जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने वाला बजट है।

सीएम ने कहा पिछली सरकार ने भारी भरकम बजट जरूर रखें मगर झुग्गी झोपड़ी वालों के लिए कोई योजना नहीं बनाई कोई काम नहीं किया उनकी जिंदगी बद से बदतर होती जा रही थी। प्रधानमंत्री आवास योजना को लागू किया जाएगा। जिसमें 20 करोड़ का आवंटन होगा।

पिछली सरकार ने प्रधानमंत्री आवास योजना लागू होने नहीं दी और इसका किसी को लाभ नहीं होने दिया। रेखा गुप्ता ने कहा कि विकास कार्यों के लिए विधायक निधि पूरी मिलेगी।

सीएम रेखा गुप्ता ने AAP पर कसा तंज

सीएम ने कहा कि यह बजट केवल सड़कों पुलों और एलीवेटर कॉरिडोर बनाने का ही बजट नहीं है बल्कि पूरी दिल्ली की दशा सुधारने का बजट है। सीएम ने AAP संयोजक अरविंद केजरीवाल पर हमला बोलते हुए कहा कि आपने शीशमहल बनवाया, हम गरीबों के लिए घर बनवाएंगे।

कहा कि पिछली सरकार और हमारे बजट में बहुत फर्क है पिछली सरकार केवल घोषणाएं करती थी और हम वादे निभाते हैं। आप हाथ की सफाई जानते हो, कूड़े को हम ही साफ कराएंगे। उन्होंने कहा कि आपने अपने लिए लाखों रुपए का शौचालय बनवाया हम झुग्गी वालों के लिए शौचालय बनवाएंगे। विपक्षी सदस्यों की ओर इशारा करते हुए कहा कि आप केवल बातें बनाते थे और हम दिल्ली को बनाएंगे।

दिल्ली में उद्योगपति व्यापारी परेशान थे, कोई भी अफसर जाकर उन्हें धमका देता था और वह परेशान होते थे, दिल्ली का उद्योग पटरी से उतर गया था दिल्ली में व्यापार और निवेश ठप हो गया था, मगर अब प्रधानमंत्री की सोच के तहत दिल्ली में व्यापार और निवेश के द्वार खुलेंगे।

बजट की 10 बड़ी बातें

दिल्ली में महिलाओं 2500 रुपये प्रतिमाह दिया जाएगा।

210 करोड़ गर्भवती महिलाओं को दिए जाएंगे।

जनता को अब 10 लाख का बीमा मिलेगा।

जन आरोग्य योजना में 5 लाख का अतिरिक्त बीमा मिलेगा।

50 हजार अतिरिक्त कैमरे लगाए जाएंगे।

कनेक्टिविटी सुधार के लिए 1 हजार करोड़ रुपये दिए जाएंगे।

100 जगह अटल कैंटीन। 100 करोड़ का प्राविधान। पांच रुपए की मिलेगी थाली।

दिल्ली में सड़कों के सुधार के लिए 3800 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे।

झुग्गी बस्तियों के विकास के लिए DUSIB को 696 करोड़ दिए जाएंगे।

दिल्ली में नई औद्योगिक और वेयर हाउसिंग नीति लाई जाएगी।

सीनियर सिटिजन्स को देंगे चार से पेंडिंग ग्रांट- 20 करोड़ का ग्रांट।

रेखा गुप्ता ने इसे ऐतिहासिक बजट करार देते हुए कहा कि यह भ्रष्टाचार और अक्षमता के युग को समाप्त करने वाला बजट है

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

इस बजट में दिल्ली सरकार ने 100 अटल कैंटीन स्थापित करने के लिए 100 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। ये कैंटीन गरीब और जरूरतमंद लोगों को सस्ते और पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने के लिए बनाई जाएंगी। ऐसे में आज के इस फीचर राइटिंग में जानेंगे कि आखिर ये अटल कैंटीन क्या हैं और किन लोगों के लिए ज्यादा फायदेमंद होगा। इसके लिए पढ़ते जाएं इस फीचर राइटिंग को अंत तक।

अटल कैंटीन क्या हैं?

अटल कैंटीन भारत के कई राज्यों में शुरू की गई सब्सिडी वाली भोजनालय हैं, जो आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को किफायती दरों पर भोजन प्रदान करती हैं। इसका नाम पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के सम्मान में रखा गया है।

बता दें, दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी ने अपने 2025 के चुनावी घोषणापत्र में हर झुग्गी-झोपड़ी क्षेत्र में अटल कैंटीन शुरू करने का वादा किया था। इन कैंटीन में मात्र 5 रुपये में गरमा-गरम पका हुआ भोजन उपलब्ध होगा। यह योजना तमिलनाडु की अम्मा कैंटीन और कर्नाटक की इंदिरा कैंटीन से प्रेरित है। हरियाणा और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में भी इस तरह की कैंटीन किसानों और मजदूरों के लिए शुरू की गई हैं, जहां 10 रुपये में चपाती, चावल, दाल और सब्जी दी जाती है।

बजट की मुख्य विशेषताएं

रेखा गुप्ता ने विधानसभा में कहा कि यह बजट दिल्ली को विकसित दिल्ली की ओर ले जाएगा। इसमें बुनियादी ढांचे के विकास के लिए पूंजीगत व्यय को दोगुना कर 28,000 करोड़ रुपये कर दिया गया है। सड़क, सीवर सिस्टम, और जल आपूर्ति जैसे क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। इसके अलावा, महिला समृद्धि योजना के लिए 5,100 करोड़ रुपये और एनसीआर क्षेत्र से बेहतर कनेक्टिविटी के लिए 1,000 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है।

दिल्ली के लिए एक नई शुरुआत

सीएम रेखा गुप्ता ने कहा, "यह साधारण बजट नहीं है। यह खराब अर्थव्यवस्था से उबरकर विकास की ओर बढ़ने का बजट है।" अटल कैंटीन जैसी योजनाएं न केवल भूख मिटाने में मदद करेंगी, बल्कि गरीबों के जीवन स्तर को भी ऊंचा उठाएंगी। यह बजट दिल्ली के विकास और आत्मनिर्भरता की दिशा में एक बड़ा कदम है।

"दिल्ली सरकार का बजट 2025-26 प्रस्तुत करते हुए दिल्ली नगर निगम को उचित फंड वृद्धि दी है"

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के प्रवक्ता प्रवीण शंकर कपूर ने कहा है की दिल्ली की मुख्य मंत्री रेखा गुप्ता लम्बे समय तक नगर निगम पार्षद रही हैं और उसी का परिणाम है की उन्होने दिल्ली सरकार का बजट २०२५-२६ प्रस्तुत करते हुए दिल्ली नगर निगम को उचित फंड वृद्धि दी है। दिल्ली भाजपा प्रवक्ता ने कहा था की गत वर्ष २०२४-२५ के बजट में तत्कालीन वित्त मंत्री आतिशी मार्लेना ने प्राइमरी शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता मदों में दिल्ली नगर निगम को रूपए 3153 करोड़ की राशि आवंटित की थी जबकि सीएम रेखा गुप्ता ने अपने बजट में लगभग १२. 5% की वृद्धि देते हुए रूपए 3560 करोड़ कर दिया है। इसी तरह भाजपा सरकार ने बी.टी.ए. मद में दिल्ली नगर निगम को 13% से अधिक की वृद्धि के साथ रूपए 3337 करोड़ दिए हैं जबकि अरविंद केजरीवाल सरकार ने गत वर्ष केवल रूपए २९५५ करोड़ दिए थे। इसके अतिरिक्त दिल्ली नगर निगम गत अनेक वर्षों से दिल्ली की केजरीवाल सरकार से स्टाम्प ड्यूटी एवं पार्किंग शुल्क का पूरा हिस्सा देने की मांग कर रहा था जिसे आज सीएम रेखा गुप्ता सरकार ने पूरा किया है। पहले की ही तरह गत वर्ष भी दिल्ली की केजरीवाल सरकार ने स्टाम्प ड्यूटी एवं पार्किंग शुल्क के के मद मे दिल्ली नगर निगम को मात्र रूपए २३१५ करोड़ दिए थे जिसे मुख्य मंत्री रेखा गुप्ता ने वास्तविक आधार पर रूपए 3640 करोड़ किया है।

दिल्ली के किसानों की मौज, अब 6000 की जगह मिलेंगे 9000

27 साल बाद दिल्ली की सत्ता में वापसी करने वाली भाजपा सरकार ने मंगलवार को अपना पहला बजट पेश किया। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने बजट पेश करते हुए अपने चुनावी वादों पर फोकस किया। सीएम रेखा गुप्ता ने आगामी वित्तीय वर्ष के लिए 1 लाख करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया जो आप सरकार के पिछले बजट से लगभग 31 प्रतिशत अधिक है।

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने मंगलवार को विधानसभा में अपनी सरकार का पहला बजट पेश किया। सीएम ने इस बजट में दिल्लीवालों को कई सौगातें दी। दिल्ली की किसानों को अब 6000 रुपये की जगह 9000 रुपये मिलेंगे। इसके लिए दिल्ली के बजट में पीएम किसान सम्मान निधि के लिए 5 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। बता दें कि अभी प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत पात्र किसानों को 2-2 हजार रुपये की तीन किस्तों में सालाना 6 हजार रुपये दिए जाते हैं

दिल्ली के लिए 1 लाख करोड़ रुपये का बजट

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि दिल्ली सरकार का इस वित्तीय वर्ष का बजट 1 लाख करोड़ रुपये होगा, जो आम आदमी पार्टी सरकार के पिछले बजट की तुलना में 31.5 प्रतिशत ज्यादा है।

मुख्यमंत्री ने कहा, ₹पिछली सरकार ने विकास पर कम खर्च किया और कहा कि हमारे पास बजट और फंड नहीं है। यह पैसे की कमी नहीं थी, बल्कि राजनीतिक कारणों से उन्होंने दिल्ली का विकास नहीं किया। वे दिल्ली और लोगों के लिए काम नहीं करना चाहते थे। उनके निजी राजनीतिक एजेंडे के कारण पूरी दिल्ली को नुकसान उठाना पड़ा।₹

यमुना की सफाई के लिए 9000 करोड़ रुपये आवंटित

दिल्ली सरकार ने सीवर के विकास, पानी की सफाई और यमुना नदी के लिए 9000 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं, यह घोषणा मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने मंगलवार को विधानसभा में की है। दिल्ली सरकार के बजट में भाजपा के चुनाव संकल्प पत्र में किए गए कई वादों पर फोकस किया गया।

'मेक इन इंडिया' को अब 'मेक एआई इन इंडिया' तक विस्तार किया जाना चाहिए : राघव चड्ढा

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली। राज्यसभा में जीरो आवर के दौरान आम आदमी पार्टी के सांसद राघव चड्ढा ने वैश्विक एआई दौड़ में भारत की स्थिति पर चिंता जताई और चेतावनी दी कि जहां अमेरिका और चीन तेजी से आगे बढ़ रहे हैं, वहीं भारत पिछड़ सकता है। उन्होंने एआई निवेश और पेटेंट में भारी अंतर को उजागर किया, जबकि भारत वैश्विक एआई कार्यबल का 15 फीसद योगदान देता है। सांसद ने जोर देकर कहा कि भविष्य में 'विश्वगुरु' वही देश होगा जो स्वदेशी एआई में मजबूत होगा और 'मेक इन इंडिया' के साथ-साथ हमें 'मेक एआई इन इंडिया' की ओर बढ़ना चाहिए।

राघव चड्ढा ने कहा कि एआई भारत के उभरते हुए भविष्य के लिए जरूरी है। अमेरिका के पास चैटजीपीटी, जेमिनी, एन्थ्रोपिक, ग्रोक हैं। चीन के पास डीपसीक है, जो सबसे शक्तिशाली और किफायती है। लेकिन सवाल यह है कि एआई की इस दुनिया में भारत कहां है? क्या भारत इसमें पिछड़ता रहेगा और अपना एआई मॉडल नहीं बना पाएगा?

राघव चड्ढा ने पेटेंट में अंतर को रेखांकित करते हुए कहा कि 2010 से 2022 तक अमेरिका ने दुनिया के 60 फीसद और चीन ने 20 फीसद एआई पेटेंट दाखिल किए,, जबकि भारत ने सिर्फ 0.5 फीसद पेटेंट दाखिल किए। उन्होंने भारत की क्षमता पर जोर देते हुए कहा कि भारत में सबसे अधिक योग्यता और मेहनती प्रतिभा है। हम वैश्विक एआई कार्यबल का 15 फीसद योगदान देते हैं, जिसमें 4.5 लाख पेशेवर विदेश में काम कर रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि भारत में दुनिया में तीसरा सबसे अधिक एआई कौशल प्रवेश (स्किल पेनिट्रेशन) है। हमारे पास कौशल, प्रतिभा, मेहनती लोग, विशाल डिजिटल अर्थव्यवस्था और 90 करोड़ इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं। फिर भी हम एआई के केवल उपभोक्ता बन गए हैं, निर्माता नहीं।

उन्होंने ओपनएआई के संस्थापक के हालिया बयान का जिक्र किया, जिसमें उन्होंने कहा था कि वे भारत के एआई भविष्य को लेकर पूरी तरह निराश हैं। राघव चड्ढा ने जोर दिया कि हमें इसका जवाब देना होगा और एआई का निर्माता बनना होगा, जिसके लिए कुछ कदम उठाने जरूरी हैं।

सांसद ने भारत को एआई महाशक्ति बनाने का रोडमैप पेश करते हुए कहा कि भारत को स्वदेशी एआई चिप्स और उच्च-प्रदर्शन कंप्यूटिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर विकसित करना चाहिए ताकि घरेलू नवाचार को बढ़ावा मिले। इसके लिए एक समर्पित एआई इन्फ्रास्ट्रक्चर फंड की जरूरत होगी। भारतीय संस्थानों और एआई स्टार्टअप्स को उदार अनुसंधान अनुदान दिए जाएं और शीर्ष एआई प्रतिभा को भारत में रोकने के लिए प्रतिस्पर्धी अवसर, इन्फ्रास्ट्रक्चर और प्रोत्साहन दिए जाएं।

उन्होंने आगे कहा कि स्थानीय एआई स्टार्टअप्स को बड़े पैमाने पर मौजूदा डेटा तक पहुंच दी जानी चाहिए, जो मेटा और गूगल के पास है लेकिन भारतीय कंपनियों के पास नहीं। उन्होंने निवेश बढ़ाने पर जोर देते हुए कहा कि अमेरिका ने एआई के लिए 500 बिलियन डॉलर से अधिक, चीन ने 137 बिलियन डॉलर से अधिक खर्च किए हैं, जबकि भारत का मिशन केवल एक बिलियन डॉलर का है। अमेरिका अपनी जीडीपी का 3.5 फीसद और चीन 2.5 फीसद अनुसंधान और विकास (आरएंडडी) पर खर्च करता है, जबकि भारत केवल 0.7 फीसद खर्च करता है।

राघव चड्ढा ने निष्कर्ष में कहा कि भविष्य में 'विश्वगुरु' वही देश होगा जो स्वदेशी एआई में मजबूत होगा। मेक इन इंडिया के साथ-साथ हमें 'मेक एआई इन इंडिया' की ओर बढ़ना चाहिए।

उन्होंने चेतावनी दी कि एआई केवल तकनीक नहीं है, यह आर्थिक शक्ति, राष्ट्रीय सुरक्षा और संप्रभुता का मामला है। हम विदेशी एआई मॉडल्स पर निर्भर नहीं रह सकते। भारत को अपना खुद का निर्माण करना होगा।

भारत को एआई महाशक्ति बनाने के लिए राघव चड्ढा के सुझाव

- स्वदेशी एआई चिप्स और उच्च-प्रदर्शन कंप्यूटिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर विकसित करें ताकि घरेलू नवाचार को बढ़ावा मिले।

- चिप निर्माण को प्रोत्साहन दें और देशभर में समर्पित एआई कंप्यूटिंग सिस्टम स्थापित करें।

- डेटा संरक्षण, राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता के लिए संप्रभु एआई मॉडल बनाएं।

- भारतीय संस्थानों और एआई स्टार्टअप्स को उदार अनुसंधान अनुदान प्रदान करें।

- शीर्ष एआई प्रतिभा को भारत में रोकने के लिए प्रतिस्पर्धी अवसर, इन्फ्रास्ट्रक्चर और प्रोत्साहन दें।

"आप" सांसद ने कहा कि 140 करोड़ भारतीय पूछ रहे हैं, क्या हम एआई के केवल उपभोक्ता रहेंगे या निर्माता बनेंगे? नीतिगत कागजों का समय खत्म हो चुका है। अब कार्रवाई का समय है।

उन्होंने सरकार से स्पष्ट, समयबद्ध राष्ट्रीय एआई रणनीति की घोषणा करने का आग्रह किया, जिसमें मजबूत फंडिंग, संस्थागत सहयोग और इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास शामिल हो। कहा कि भारत के पास प्रतिभा, उत्साह और क्षमता है। अब हमें दूरदृष्टि और निवेश की जरूरत है। दुनिया इंतजार नहीं कर रही, हमें भी नहीं करना चाहिए।

दिल्ली में होमगार्ड की संख्या बढ़ाने से सिविल डिफेंस वॉलंटियरस को दिये आश्वासन की पूर्ति का रास्ता खुला : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की दिल्ली की भाजपा सरकार का बजट 2025-26 दिल्ली के चौहमुखी विकास के साथ ही आम नागरिकों के लिए बेहतर जीवन देने को समर्पित है।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की जहां अरविंद केजरीवाल सरकार गत तीन वर्ष से दिल्ली बजट की कुल राशि को गिरा रही थी वही सीएम रेखा गुप्ता सरकार के पहले बजट ने 31.5% की वृद्धि के साथ बजट की कुल राशि को 1 लाख करोड़ रूपये को पार करने के साथ ही सरकार के कैपिटल खर्च को लगभग दुगना करते हुए 15089.25 करोड़ रूपए से बढ़ा कर 28115.48 करोड़ रूपए पर पहुंचा दिया है जिससे दिल्ली के विकास के साथ साणानय रखरखाव मे भी वृद्धि होगी।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की सीएम रेखा गुप्ता का बजट 2025-26 भाजपा के संकल्प पत्र की पूर्ति कर रहा है, बजट में महिला समृद्धि योजना, प्रधान मंत्री जन आरोग्य योजना में डबल बीमे के साथ महिला सुरक्षा के लिए 3.30 लाख सी.सी.टी.वी. के साथ ही, डयूसिब बजट को 3 गुणा बढ़ा कर स्लम क्षेत्रों के सुधार के बम्पर कदम उठाये गये हैं।

दिल्ली में होमगार्ड की संख्या को 10285 से बढ़ा कर 25000 करने के प्रस्ताव से सिविल डिफेंस वॉलंटियरस को दिये आश्वासन की पूर्ति का रास्ता खुला है।

शिक्षा एवं स्वास्थ्य के लिये सीएम रेखा गुप्ता सरकार ने योजनाबद्ध बजट आवंटित कर दिल्ली के सरकारी स्कूलों एवं अस्पतालों के इंफ्रास्ट्रक्चर सुधार के साथ ही मूलभूत शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं का स्तर सुधार के कदम उठाये हैं।

बजट में यमुना सफाई, एस.टी.पी. निर्माण के साथ ही, पर्यावरण सुधार के लिए भी योजनाबद्ध बजट लाकर सरकार ने पर्यावरण सुधार के चुनाव संकल्प की पूर्ति की है।

मां यमुना को मिल जाएगी प्रदूषण से मुक्ति, नहीं गिरेंगे गंदे नाले; सफाई पर खर्च होगी बड़ी रकम

दिल्ली में यमुना नदी को अब नई पहचान मिलेगी। यमुना प्रदूषण से मुक्त हो सकेगी। इसके लिए बजट में बड़ा एलान किया गया है। सभी एसटीपी का उन्नयन कर बढ़ाई जाएगी क्षमता व गुणवत्ता मरम्मत व देखरेख पर ध्यान रहेगा। पीएम मोदी ने चुनाव प्रचार के दौरान यमुना नदी को दिल्ली की पहचान बनाने का वादा किया था।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। यमुना की सफाई प्रमुख चुनावी मुद्दा रहा है। प्रधानमंत्री ने इसे निर्मल व अविरल करने, साबरमती रिवर फ्रंट की तरह इसके तट को विकसित करने और इसे दिल्ली की पहचान बनाने का वादा किया था।

पार्टी के चुनाव संकल्प पत्र में भी यमुना को स्वच्छ करने का संकल्प था। भाजपा सरकार की सरकार बनने के साथ ही इस संकल्प को पूरा करने के लिए यमुना की सफाई शुरू हो गई है।

बजट में भी इसे लेकर बड़ी घोषणा की गई है। नदी में प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण नालों व सीवर का पानी गिरना है। इसके समाधान के लिए 40 विकेंद्रीकृत सीवेज उपचार संयंत्रों (डीएसटीपी) बनाने और चालू सीवेज उपचार संयंत्रों (एसटीपी) के उन्नयन की घोषणा की गई है।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने अपने बजट भाषण में कहा, ₹यमुना सिर्फ एक नदी नहीं है, यह हमारी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत है। यमुना की सफाई हमारे संकल्प पत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इस बजट में भी यह सर्वोच्च प्राथमिकता है। यह सुनिश्चित किया जाएगा कि यमुना में नाले का गंदा पानी न गिरे।

इसे सुनिश्चित करने के डीएसटीपी बनेंगे। इससे सीवेज को उसके स्रोत पर ही उपचार किया जा सके। अभी दिल्ली में 38 एसटीपी हैं। इसमें से आधे से अधिक अपनी क्षमता व मानक के अनुसार काम नहीं कर रहे हैं। इनका उन्नयन कर क्षमता व गुणवत्ता बढ़ाई जाएगी। इनकी मरम्मत व देखरेख पर भी ध्यान दिया जाएगा। इसके लिए पर्याप्त धन आवंटित किया गया है।

सीवर प्रणाली सही नहीं होने के कारण भी यमुना प्रदूषित हो रही है। बरसाती नालों के माध्यम से सीवेज नदी में पहुंच रहा है। इसके समाधान के लिए नए क्षेत्रों में सीवर लाइन बिछाने के साथ ही पुरानी सीवर लाइन बदलने, सीवर लाइन व यमुना की सफाई के लिए आधुनिक मशीन व अन्य उपकरण खरीदने की घोषणा की गई है।

कई नाले का गंदा पानी सीधे यमुना में गिरता है। इन नालों के गंदा पानी को मोड़कर एसटीपी तक पहुंचाया जाएगा जिससे कि उसे शोधित किया जा सके। नजफगढ़ नाला से यमुना में सबसे अधिक प्रदूषण होता है। इसके समाधान के लिए भी काम होगा।

मुख्यमंत्री ने कहा, ₹राजधानी में जल और सीवेज बुनियादी ढांचे को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप लाने के लिए केंद्र से 2,000 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता का अनुरोध किया है। इससे पानी आपूर्ति सुधारने, शहर में स्वच्छता को बेहत करने के साथ ही यमुना को साफ करने में मदद मिलेगा।₹

यमुना की सफाई के लिए आवंटित धन (करोड़ रुपये)

डीएसटीपी बनाने के लिए- 500

नालों के गंदे पानी को उपचार के लिए एसटीपी तक ले जाने की परियोजना- 250

नजफगढ़ ड्रेन के परिवर्तन व इंटरसेप्शन परियोजना-200

यमुना की सफाई के लिए आधुनिक उपकरण खरीदने के लिए-40

सीवेज व्यवस्था सुधार के लिए सुपर सकर मशीन व अन्य मशीन-20

दिल्ली में 100 जगहों पर खुलेगी अटल कैंटीन, बस 5 रुपये में मिलेगा भरपेट खाना

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने मंगलवार को विधानसभा में अपनी सरकार का पहला बजट पेश किया। उन्होंने महिला समृद्धि योजना से लेकर आयुष्मान योजना तक कई योजनाओं के लिए बजट प्रस्तावित किया है। सीएम ने दिल्ली के 100 अलग-अलग जगहों पर अटल कैंटीन खोलने की बात कही है। इसके लिए 100 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने मंगलवार को विधानसभा में अपनी सरकार का पहला बजट कीं। उन्होंने महिला समृद्धि योजना से लेकर आयुष्मान योजना तक कई योजनाओं के लिए बजट प्रस्तावित किया है। सीएम ने दिल्ली के 100 अलग-अलग जगहों पर अटल कैंटीन खोलने की बात कही। इसके लिए 100 करोड़ रुपये का प्रावधान किया। जिसमें हर गरीब लोगों को सिर्फ पांच रुपए में भोजन की थाली दी जाएगी।

'आपने शीशमहल बनवाया, हम गरीबों के लिए घर बनवाएंगे'

इस दौरान सदन में मुख्यमंत्री ने कहा कि मोदी जी को मिले एक-एक वोट का हिसाब दूंगी और दिल्ली वालों के लिए काम करके दिखाऊंगी। दिल्ली वालों की दीदी रेखा हूं, काम करके दिखाऊंगी। सीएम ने आगे कहा कि पिछली सरकार और हमारे बजट में बहुत फर्क है।

पिछली सरकार केवल घोषणाएं करती थी और हम वादे निभाते हैं। आम आदमी पार्टी पर करारा हमला बोलते हुए सीएम रेखा ने कहा कि आपने शीशमहल बनवाया, हम गरीबों के लिए घर बनवाएंगे।

चुनाव के समय भाजपा ने किया था चुनावी वादा

बता दें भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने पार्टी के चुनावी घोषणापत्र में एक बड़ा एलान किया था। जिसमें नड्डा ने दिल्ली के झुग्गियों में अटल कैंटीन खोलने की बात कही थी। जिसमें गरीबों को सिर्फ 5 रुपये में भरपेट भोजन दिया जाएगा। नड्डा ने बताया था कि इस कैंटीन में गरीबों को पोषणयुक्त भोजन उपलब्ध कराई जाएगी।

नड्डा ने कहा कि गरीबों के लिए सभी झुग्गी बस्तियों में अटल कैंटीन योजना के अंतर्गत पांच रूपये में पौष्टिक भोजन मिलेगा। आम आदमी पार्टी ने 100 कैंटीन खोलने का वादा किया था जिसे पूरा नहीं किया, लेकिन हमारी सरकार बनते ही गरीबों के लिए सबसे पहले सस्ती दरों पर भोजन का इंतजाम किया जाएगा।

पानी की आपूर्ति में घोटाला दूर करने के लिए पानी की टैंकरों में जीपीएस सिस्टम लगाया जाएगा।

सीवर समस्या दूर करने के लिए राय लेने के लिए 10 करोड़ का बजट रखा गया।

पानी की चोरी रोकने के लिए नया सिस्टम लगाने पर डेढ़ सौ करोड रुपए खर्च किए जाएंगे।

टिकट के नाम पर भ्रष्टाचार बंद होगा, महिलाओं को बसों में टिकट नहीं लेना पड़ेगा, उन्हें एक कार्ड दिया जाएगा, जिससे वह यात्रा कर सकेंगी।

नोएडा से ग्रेटर नोएडा जाना होगा बेहद आसान, नई कनेक्टिविटी से 16 किमी कम होगी दूरी

परिवहन विशेष न्यूज

नोएडा-ग्रेटर नोएडा के बीच नई कनेक्टिविटी बनने से सफर बेहद आसान होगा जाएगा। साथ ही नोएडा और ग्रेटर नोएडा को जोड़ने वाली नई कनेक्टिविटी से यातायात भार कम होगा और यात्रा दूरी 16 किमी कम हो जाएगी। एलजी चौक से एक्सप्रेसवे की दूरी अब केवल 5 मिनट में पूरी हो सकेगी। इस प्रोजेक्ट पर 147 करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं।

नोएडा। नोएडा-ग्रेटर नोएडा दोनों शहरों को जोड़ने के लिए नई कनेक्टिविटी तैयार हो रही है, जिसके तहत हरनंदी पर पुल की एप्रोच रोड का काम चल रहा है, जो अगस्त तक पूरा होगा। यह एप्रोच रोड हरनंदी पुल से नोएडा ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेसवे की 45 मीटर सर्विस रोड तक करीब 623 मीटर तक बनाई जा रही है।

पूरे प्रोजेक्ट पर कितने करोड़ होंगे खर्च?

कंपनी ने आठ फरवरी को निर्माण शुरू किया था। इसके बनने के बाद ग्रेटर नोएडा के एलजी चौक से एक्सप्रेसवे तक की दूरी महज पांच मिनट में पूरी की जा सकेगी। पहले यह दूरी तय करने में 16 किमी अतिरिक्त चलना पड़ता था। इस पूरे प्रोजेक्ट पर 147 करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे है।

इन सेक्टरों को मिलेगा इसका लाभ

एलजी चौक से एक्सप्रेसवे तक यह लिंक 2,090 मीटर लंबा है। इसे 60 मीटर चौड़ा बनाया जा रहा है। इस लिंक रोड पर एक पुल हरनंदी पर सेतु निगम बना रहा है। यह पुल नोएडा और ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की सहभागिता से बनाया गया है। ग्रेटर नोएडा की एप्रोच रोड ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण और नोएडा प्राधिकरण बना रहा है।

प्राधिकरण का एरिया करीब 1,020 मीटर का है। इसमें 45 मीटर चौड़ी सड़क एप्रोच रोड 623 मीटर की है। दिल्ली और नोएडा से एक्सप्रेसवे होते हुए परी चौक, एलजी चौक, कलक्ट्रेट, सूरजपुर, सेक्टर गामा एक, गामा दो, बीटा एक, बीटा दो, उद्योग विहार, उद्योग विहार एक्सटेंशन, गाजियाबाद को जाने वाले लोगों को 16 किमी अतिरिक्त चलना पड़ता था। इसके बनने से दूरी कम होगी। कई सेक्टरों को इसका लाभ मिलेगा।

क्या होगा खास?

62 करोड़ रुपये में पुल का निर्माण किया जा रहा है।

सेतु की लंबाई 210 मीटर है। इसको बनाने में 62.40 करोड़ खर्च किए जा रहे है।

परियोजना का शिलान्यास मुख्यमंत्री ने 25 जनवरी 2019 में किया था।

नोएडा की ओर बनाई जाने वाली इस एप्रोच रोड की ऊंचाई 5.50 मीटर से 8.50 मीटर तक है।

वहीं ग्रेटर नोएडा की ओर परियोजना की लंबाई 1070 मीटर है।

नोएडा एयरपोर्ट के पास अवैध निर्माण पर जमकर गरजा बुलडोजर, 32 अवैध निर्माण कराए ध्वस्त

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के पास तीसरे चरण में अधिग्रहित होने वाली भूमि पर बने अवैध निर्माणों को यमुना प्राधिकरण ने ध्वस्त कर दिया। सोमवार दोपहर बाद तीन बजे प्रशासन और प्राधिकरण की टीमें भारी पुलिस फोर्स के साथ सीधे किशोरपुर गांव पहुंची और 32 निर्माणों को ध्वस्त कर दिया। नोएडा एयरपोर्ट के तीसरे चरण में जेवर के 14 गांव की 2053 हेक्टेयर जमीन का अधिग्रहण होना है।

जेवर। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के पास तीसरे चरण में अधिग्रहित होने वाली भूमि पर यमुना प्राधिकरण की बिना अनुमति बनाए गए मिट्टी के महलों पर सोमवार को बुलडोजर की बड़ी कार्रवाई हुई। सोमवार दोपहर बाद तीन बजे प्रशासन और प्राधिकरण की टीमें भारी पीएसी और पुलिस फोर्स के साथ सीधे किशोरपुर गांव पहुंची और अवैध निर्माणों को ध्वस्त करना शुरू कर दिया।

इस दौरान कुछ लोग अपने अधिवक्ताओं के साथ ध्वस्तीकरण की कार्रवाई रुकवाने के लिए पहुंचे लेकिन कार्रवाई में जुटी टीमों ने कार्रवाई को वैध बताते हुए रोकने से साफ मना कर दिया। ध्वस्तीकरण की खबर पूरे क्षेत्र में आग की तरह फैल गई लोगों की भारी भीड़ कार्रवाई को देखने के लिए उमड़ने लगी। हालांकि मौके पर मौजूद पुलिस फोर्स ने सभी को कार्रवाई स्थल से दूर करते हुए शाम छह बजे तक 32 निर्माणों को ध्वस्त कर दिया। नोएडा एयरपोर्ट के तीसरे चरण में जेवर के 14 गांव की 2053 हेक्टेयर जमीन का अधिग्रहण होना है। अधिकारियों ने बताया कि यीडा के अधिसूचित क्षेत्र के गांव में बिना किसी अनुमति के मुआवजा और प्लॉट के लालच में बाहरी लोगों ने निम्न गुणवत्ता के मिट्टी के महल बनाकर खड़े कर दिए।

मुख्य सचिव ने एयरपोर्ट निरीक्षण के बाद यीडा को पत्र लिखते हुए अवैध निर्माण को रोकने और कार्रवाई के आदेश दिए थे, जिसके बाद यीडा ने अवैध निर्माण को हटाने के लिए नोटिस जारी किए लोगों ने स्वयं निर्माण न हटाने पर ध्वस्तीकरण के आदेश जारी कर कार्रवाई शुरू कर दी। सोमवार सुबह से ही प्रशासन और प्राधिकरण की टीमें जेवर कोतवाली में पहुंच गई।

'यूपी पुलिस से बाकी राज्य भी सीखें', पूर्व डीजीपी संजय कुंडू ने पॉडकास्ट में दिया बड़ा बयान

यूपी पुलिस के पॉडकास्ट बियॉन्ड द बैज के नौवें एपिसोड में हिमाचल प्रदेश के पूर्व डीजीपी संजय कुंडू ने डीसीपी सेंट्रल नोएडा शक्तिमोहन अवस्थी से बातचीत की। कुंभ से लेकर अपनी महकमे में भर्ती देश-विदेश में तैनाती जल संसाधन मंत्रालय में हुए नीति फैसलों को लेकर अनुभवों को साझा किया। इस एपिसोड को यूपी पुलिस ने इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित किया है।

नोएडा। उत्तर प्रदेश पुलिस के पाडकास्ट बियांड द बैज का नौंवा एपिसोड में जिले में शूट हुआ। इसमें हिमाचल प्रदेश के पूर्व डीजीपी संजय कुंडु से डीसीपी सेंट्रल नोएडा शक्तिमोहन अवस्थी ने बात की।

पूर्व डीजीपी ने कुंभ से लेकर अपनी महकमे में भर्ती, देश-विदेश में तैनाती, जल संसाधन मंत्रालय में हुए नीति फैसलों को लेकर अनुभवों को साझा किया। उधर, यूपी पुलिस को ओर से एपिसोड को इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित किया गया।

वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के रूप में अपने अनुभव किए साझा

30 मिनट 36 सेकेंड के एपिसोड में संजय कुंडू ने महाकुंभ में श्रद्धालु और वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के रूप में अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि सफल आयोजन को प्रदेश सरकार और महकमा बधाई का पात्र है। देश विदेश में बृहद स्तर पर भीड़ प्रबंधन का अनूठा उदाहरण पेश किया है।

यह एक युद्ध स्तर जैसा अनुभव था। यूपी पुलिस ने दो माह तक देश की आधी से ज्यादा जनसंख्या बल को बिना थके, बिना रूके व बिना डरे संभाला। अमूमन इस तरह के चैलेंज को आर्मी डील करती हैं। इस अनुभव को अन्य राज्य पुलिस को सिखाया व पढ़ाया जाना चाहिए।

वैश्विक स्तर पर सराहनीय और अनूठा आयोजन

उन्होंने सुझाव देते हुए कहा कि मैनेजिरियल और हाइलेवल लीडरशिप जैसी दो तरह की क्षमताएं होती हैं। यह सब आयोजन में देखने को मिला। मुख्यमंत्री व डीजीपी यूपी ने आयोजन में दृष्टिकोण, नेतृत्वक्षमता, डेलीगेशन, विश्वास, तकनीक का प्रयोग, धैर्य, श्रद्धुलाओं के प्रति सम्मान जैसी विशेषताओं के उदाहरण पेश किए।

इसके चलते आयोजन सफल रहा। इससे उत्तर प्रदेश समेत पूरे देश की साख बढ़ी है। यह वैश्विक स्तर पर सराहनीय और अनूठा आयोजन है। दुनिया से इसका साक्षात्कार कराने के लिए इसका डॉक्यूमेंटेशन और सिरियल भी शूट किया जाना चाहिए। सरकार को लेशन लर्न जैसी पहल भी होनी चाहिए। जिससे फ्यूचर जेनरेशन पुलिसिंग को भी मदद मिल सके।

नोएडा वाले ध्यान दें! 20 दिन बंद रहेगी शाहबेरी रोड, परेशानी से बचने के लिए इन रास्तों का करें इस्तेमाल

ग्रेटर नोएडा में शाहबेरी रोड के चौड़ीकरण का काम 25 मार्च से शुरू हो गया है। गाजियाबाद को ग्रेटर नोएडा से जोड़ने वाली 3 किलोमीटर लंबी इस सड़क को दोनों तरफ करीब 1.5 मीटर चौड़ा किया जाएगा। सड़क चौड़ीकरण का काम 20 दिन में पूरा हो जाएगा। सड़क चौड़ी होने के बाद लोगों के लिए क्रॉसिंग रिपब्लिक आना-जाना आसान हो जाएगा।

ग्रेटर नोएडा। शाहबेरी मार्ग के चौड़ीकरण का काम आज से शुरू हो जाएगा। लगभग तीन किलो मीटर लंबी इस सड़क की चौड़ाई दोनों तरफ डेढ़-डेढ़ मीटर बढ़ाई जाएगी। अगले 20 दिन तक इस मार्ग पर आवागमन पूरी तरह से बाधित रहेगा।

ट्रैफिक पुलिस ने किया रूट डायवर्जन

वाहन चालकों की सहूलियत के लिए ट्रैफिक पुलिस ने रूट डायवर्जन किया है। इसकी एडवाइजरी पूर्व में जारी की जा चुकी है। ग्रेटर नोएडा वेस्ट के इटेड़ा गोलचक्कर से क्रॉसिंग रिपब्लिक तक शाहबेरी मार्ग की चौड़ाई अभी तीन मीटर के लगभग है। एक लेन की सड़क होने के कारण यहां अक्सर जाम की स्थिति बनी रहती है।

इसको देखते हुए ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने इस मार्ग को चौड़ा करने की तैयारी पूरी कर ली है। यह काम आज से शुरू हो जाएगा। मंगलवार सुबह 10 बजे के बाद आवागमन पूरी तरह से बंद कर दिया जाएगा। प्राधिकरण के प्रबंधक नीतीश कुमार ने बताया कि विकास कार्य के चलते शाहबेरी मार्ग 25 मार्च से 20 दिन के लिए बंद रहेगा। इस दौरान रूट डायवर्ट रहेगा।

इन वैकल्पिक मार्गों का करें इस्तेमाल

ट्रैफिक पुलिस द्वारा रूट डायवर्जन के संबंध में जारी की गई एडवाइजरी के मुताबिक इटेड़ा गोलचक्कर से शाहबेरी होते हुए गाजियाबाद की ओर जाने वाले वाहन गौड़ चौक से तिगरी गोलचक्कर की ओर 130 मीटर सड़क से होते हुए गंतव्य की ओर जा सकेंगे।

तिलपता से शाहबेरी होते हुए गाजियाबाद की ओर जाने वाले वाहन एकमूर्ति गोलचक्कर से दाहिने मुड़कर रोजा चौका से छपरौला रेलवे फाटक से लाल कुआं होते हुए गंतव्य की ओर जा सकते हैं।

वहीं एबीईएस, गाजियाबाद/एनएच-24 की ओर से शाहबेरी होते हुए नोएडा ग्रेटर नोएडा की ओर आने वाले वाहन शाहबेरी के रास्ते से न आकर एनएच-24 विजयनगर बाईपास मार्ग से 130 मीटर चौड़ी सड़क से तिगरी गोलचक्कर होते हुए गौड़ चौक से गंतव्य की ओर जा सकते हैं।

26 मार्च की रात तीन घंटे रहेगा डायवर्जन

उधर, ऊर्जा निगम की ओर से सेक्टर 132 स्थित सिफी डेटा सेंटर परिसर तक विद्युल लाइन बिछाने संबंधी कार्य के चलते 26 मार्च की रात करीब साढ़े घंटे तक रूट डायवर्जन रहेगा।

डीसीपी यातायात लखन सिंह यादव ने बताया कि ऊर्जा निगम की ओर से 26 मार्च की रात एक बजे सुबह साढ़े चार बजे तक सेक्टर 45 रोड (निकट आम्रपाली चौकी) पर सबस्टेशन से सेक्टर 132 सिफी डेटा सेंटर तक 220 केवी लाइन की ओवरहेड लाइन बिछाये जाने व तार बदले जाने का कार्य कराया जाना प्रस्तावित है।

सेक्टर 98, 100 व 104 तिराहा और एक्सप्रेसवे डबल लेन सर्विस रोड से आम्रपाली चौकी सैक्टर 45 की ओर जाने वाले यातायात पर रूट डायवर्जन रहेगा।

सेक्टर 44 गोलचक्कर से एक्सप्रेसवे डबल लेन सर्विस रोड से सेक्टर 45, 98, 100 व 104 की ओर जाने वाला यातायात हाजीपुर चौक होकर आगे की ओर जाएगा।

सेक्टर 100 व 104 से सेक्टर 45 होकर सेक्टर 44 की ओर जाने वाला यातायात हाजीपुर चौक से डबल लेन सर्विस रोड होकर आगे की ओर भेजा जाएगा।

कचरा-कचरा जिंदगी, समस्या और समाधान

कुलभूषण उपमन्यु

एकमुखी समाधान से काम नहीं चलेगा। स्थानीय स्थितियों के अनुसार विविध प्रकार की तकनीकों का प्रयोग करना पड़ेगा। इसके लिए प्लास्टिक बनाने और प्लास्टिक में पैक सामान बेचने वाली कंपनियों को भी जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। उन्हें नवाचार के लिए फंड खड़ा करना चाहिए'

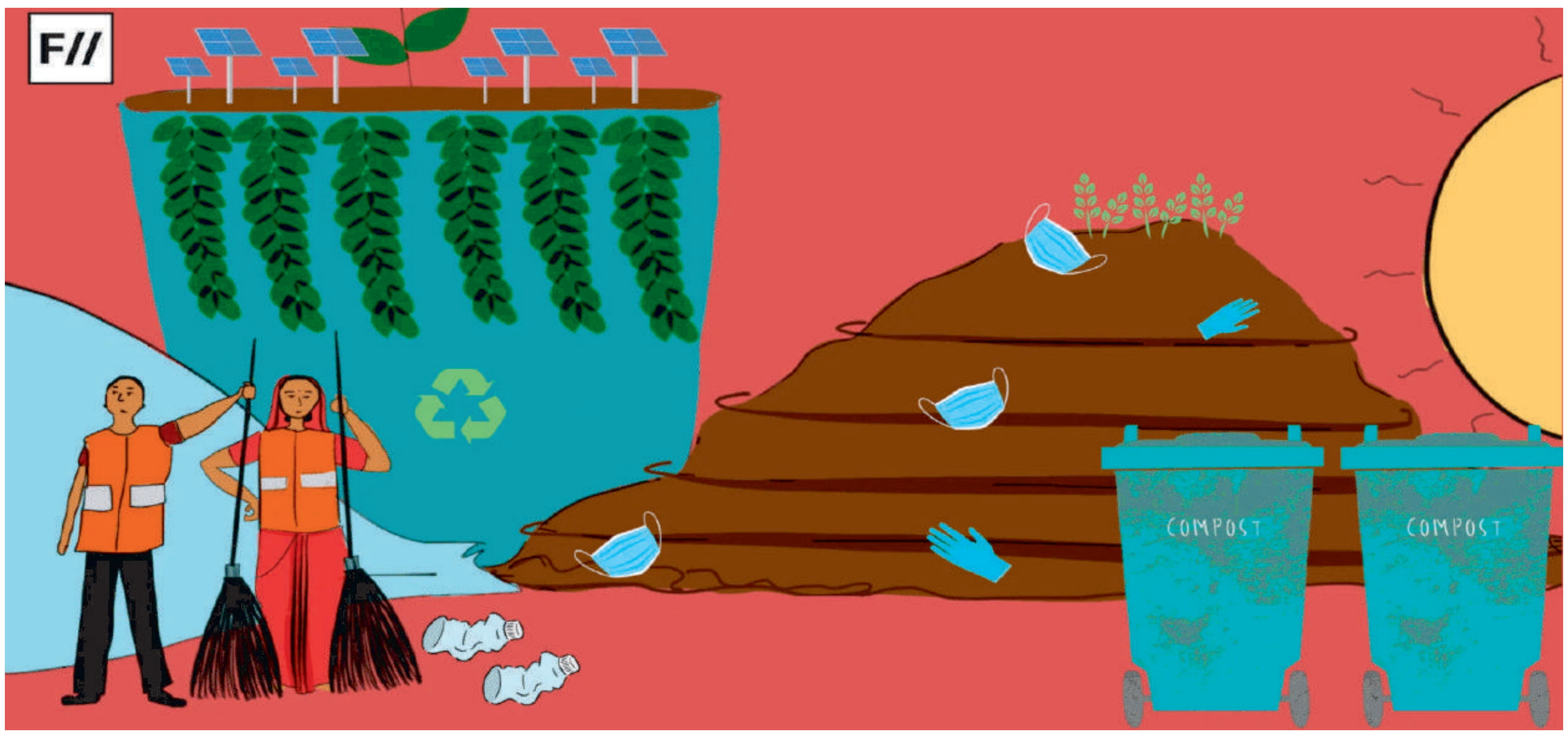

देवभूमि हिमाचल, जिसका नाम आते ही मन में एक चित्र उभरता है। निर्मल जल, स्वच्छ वायु, सुंदर चरागाह, चंहु ओर फैली हरितिमा, ऊंचे दर्रे, हिमाच्छादित गिरि शिखर, भौगोलिक विविधता, कल-कल बहती नदियां, समृद्ध वन एवं वन्य जीवन, आधुनिक आवागमन साधन, पर्याप्त आवास सुविधाएं, अनेक धार्मिक स्थल, रमणीय स्थल और सहयोगी स्वभाव के पर्वतवासी समुदाय, यानी पर्यटन के लिए आदर्श एवं सुरक्षित क्षेत्र। निःसंदेह हिमाचल ऐसा ही है। किंतु पर्यटन के साथ-साथ सूखे कचरे का भी विस्तार होता जा रहा है, जो हिमाचल के आदर्श, सौंदर्यपूर्ण प्राकृतिक परिदृश्य को ग्रसित करता जा रहा है। जगह-जगह कचरे के ढेर देख कर आदमी असहाय महसूस करने लगता है। स्वच्छता अभियान के चलते बड़े पैमाने पर शौचालय निर्माण का कार्य सफलतापूर्वक किया गया, जिसका परिणाम भी सुखद हुआ। किंतु सूखे कचरे के निष्पादन की दिशा में हालात दिन-प्रतिदिन खराब ही होते जा रहे हैं। क्या शहर और क्या गांव। शहरों से कचरा उठा कर डंपिंग स्थलों तक पूरा जा नहीं पाता। जो जा पाता है, उसके उपचार की व्यवस्थाएं अपर्याप्त हैं।

सबसे ज्यादा समस्या प्लास्टिक कचरे से पैदा हो रही है। वैसे तो यह सार्वभौमिक समस्या बन गई है, किंतु पर्वतीय क्षेत्रों के लिए तो यहां की पर्यटन पर आधारित आजीविका के लिए ही खतरा पैदा हो गया है। इस समय दो करोड़ के लगभग पर्यटक वर्षभर में आते हैं। यानी यहां की जनसंख्या से तीन गुणा। सरकार इस संख्या को पांच करोड़ करना चाहती है। आर्थिक दृष्टि से यह आजीविका और सरकारी आय के लिए लाभप्रद ही सिद्ध होने वाला है। किंतु पर्यटन अपने साथ अनेक समस्याएं और प्रकृति पर दबाव भी लाता है। इनमें से कचरे की मात्रा में बढ़ोतरी भी अवश्यंभावी समस्या है। वर्तमान कचरा प्रबंधन की स्थिति देख कर लगता है कि हम आने वाले दबाव को कैसे झेल पाएंगे, जबकि वर्तमान स्थिति को ही हम संभालने में असमर्थ सिद्ध हो रहे हैं। शहरों में भी कचरा जगह-जगह खुले में जलाने के दृश्य देखे जा सकते हैं। यहां तक कि कचरा निष्पादन स्थलों में भी कचरा जलाया जाता है। यह सीधा बीमारी को निमंत्रण है। गांव की तो हालत और भी खराब है। आजकल ज्यादातर दैनिक जरूरतों के सामान पैकिंग में ही आते हैं। कुरकुरे, नमकीन, चिप्स, चॉकलेट, करियाने का सामान, दूध, दही, सब प्लास्टिक में ही पैक होकर आ रहा है। सिंगल यूज प्लास्टिक पर पाबंदी के बाबजूद यह सब पैकिंग का कचरा तो आ ही रहा है, इसके साथ सब्जियों का बाहरी राज्यों से जो आयात हो रहा है, वह ज्यादातर प्लास्टिक की पन्नियों में ही हो रहा है। इस तरह कचरे के अंबार तो बढ़ते ही जा रहे हैं। फिर चिकित्सा से जुड़ी सामग्री, बिजली के बल्ब, बैटरियां, इलेक्ट्रोनिक सामान शहरों से लेकर गांव तक चारों ओर फैलते जा रहे हैं। खेत-खलिहान, कूहलें, वन क्षेत्र कचरे की चपेट में हैं। जब तक कोई निश्चित व्यवस्था खड़ी नहीं होती, तब तक लोगों को भी दोषी नहीं ठहराया जा सकता, क्योंकि विकल्प देकर ही सख्ती भी की जा सकती है। उसके बिना तो लोग भी मजबूरी में गैरजिम्मेदार हो जाते हैं। हिमाचल में प्रतिदिन 370 मीट्रिक टन सूखा कचरा पैदा होता है, जिसके लगातार बढ़ते जाने की संभावना है।

शहरों में कम से कम कचरा एकत्र करने की व्यवस्थाएं तो हैं, आगे उसका निष्पादन कैसे हो, यही समस्या आंशिक रूप से है। गांव की तो हालत और भी बुरी है। वहां तो कचरा एकत्रित करने की बुनियादी व्यवस्थाएं ही नहीं हैं। प्लास्टिक तो सब जगह पहुंच गया है। गांव में पहले तो केवल जैविक कचरा ही होता था, जिसका खाद बना लो या जला कर भी उतनी हानिकारक गैसें नहीं निकलती थीं। अब गांववासी उसी पुरानी सोच के साथ चल कर कचरे की समस्या से पार नहीं पा सकते। अतः गांव में पंचायतों के माध्यम से कचरा प्रबंधन की व्यवस्था बनानी पड़ेगी। पालमपुर की आईमा पंचायत की बहुप्रचारित कचरा प्रबंधन व्यवस्था भी अब बंद पड़ गई है। उसका अध्ययन करके व्यवस्था बनानी पड़ेगी। मोटे तौर पर हर घर से महीने में एक बार कम से कम कचरा एकत्रित करने की व्यवस्था की जा सकती है, जिसके लिए पंचायत उपयुक्त राशि निर्धारित कर सकती है जो हर परिवार महीने के अंत में स्वयं कचरा इकठ्ठा करने वाले कार्यकर्ता को दे सकता है। पंचायतों में अधिकांश जगह कचरा एकत्रित करने के लिए स्टोर बना दिए गए हैं। अब उनके प्रयोग करने की ओर ध्यान देना होगा। गांव में जैविक कचरा उठाने की जरूरत नहीं है। उसका खाद बनाने के लिए उपयोग किया जा सकता है। प्लास्टिक में भी मोटा प्लास्टिक कबाड़ी को बेचा जा सकता है। ठंडे की बोतलें भी बिक जाती हैं। उनके लिए केवल सख्ती से जागरूक करने की जरूरत है। अगली चुनौती एकत्रित किए गए कचरे के निष्पादन की है। इसके लिए तो सरकार को दीर्घकालीन योजना बना कर काम करना चाहिए और उसके क्रियान्वयन के लिए हर स्तर पर पर्याप्त आर्थिक व्यवस्था करनी होगी। तकनीकी व्यवस्था अगली चुनौती है। नई-नई खोजें हो रही हैं। उनका उपयोग किया जाना चाहिए। एकमुखी समाधान से काम नहीं चलेगा। स्थानीय स्थितियों के अनुसार विविध प्रकार की तकनीकों का प्रयोग करना पड़ेगा।

इसके लिए प्लास्टिक बनाने और प्लास्टिक में पैक सामान बेचने वाली कंपनियों को भी जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। कम से कम उन्हें प्लास्टिक निष्पादन के लिए नई-नई तकनीकों की खोज और नवाचार के लिए फंड खड़ा करने के लिए जिम्मेदार बनाया जाना चाहिए। 'प्रदूषण फैलाने वाला ही भरपाई करे', यह तो न्यायालय द्वारा स्थापित सिद्धांत है। किंतु लागू तो नहीं हो रहा है। इसके लागू होने से सरकार पर अतिरिक्त बोझ भी नहीं पड़ेगा। किंतु इन दीर्घकालीन उपायों को लागू करते हुए तात्कालिक उपायों की ओर भी ध्यान देना जरूरी है, वरना पर्वतीय राज्यों की हालत खराब होने वाली है। यहां की हवा, पानी, और पर्यटकों को आकर्षित करने वाली सब प्राकृतिक देनें जल्द ही कचरे की भेंट चढने वाली हैं।

होंडा एमेज के टॉप वेरिएंट को है घर लाना, दो लाख रुपये की डाउन पेमेंट के बाद कितनी जाएगी ईएमआई

परिवहन विशेष न्यूज

जापानी वाहन निर्माता Honda की ओर से कॉम्पैक्ट सेडान कार के तौर पर Honda Amaze को ऑफर किया जाता है। अगर आप भी इस कार के टॉप वेरिएंट को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं। तो दो लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इस गाड़ी को घर लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जापान की वाहन निर्माता Honda की ओर से भारतीय बाजार में कॉम्पैक्ट सेडान कार के तौर पर Honda Amaze की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से इसके टॉप वेरिएंट के तौर पर ZX को ऑफर किया जाता है। अगर इस वेरिएंट को खरीदने का मन बना रहे हैं तो दो लाख रुपये की डाउन पेमेंट देने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देनी होगी। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Honda Amaze ZX Price

होंडा की ओर से अमेज के टॉप वेरिएंट के तौर पर ZX को ऑफर किया जाता है। कंपनी इस गाड़ी के ZX वेरिएंट को 9.99 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर बिक्री के लिए उपलब्ध करवा रही है। अगर इसे दिल्ली में खरीदा जाता है तो 9.99 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के साथ ही इस पर रजिस्ट्रेशन, इंश्योरेंस भी देना होगा। इस गाड़ी को खरीदने के लिए करीब 76 हजार रुपये का रजिस्ट्रेशन टैक्स, करीब 38 हजार रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। इनके अलावा फास्टैग और अन्य चार्ज के तौर पर 5810 रुपये भी देने होंगे। जिसके बाद गाड़ी की दिल्ली में ऑन रोड कीमत 11.19 लाख रुपये हो जाती है।

दो लाख रुपये Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर Honda Amaze के ZX वेरिएंट को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में दो लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 9.19 लाख रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 9.19 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ 14797 रुपये की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी Car

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 9.19 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 14797 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Honda Amaze के ZX वेरिएंट के लिए करीब 3.23 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 14.42 लाख रुपये हो जाएगी।

किनसे होता है मुकाबला

Honda की ओर से Amaze को कॉम्पैक्ट सेडान कार सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Hyundai Aura, Maruti Dzire, Tata Tigor जैसी कारों के साथ होता है।

कैमरे ने काट तो नहीं दिया आपकी गाड़ी का चालान, ऑनलाइन ऐसे करें पता

आपकी गाड़ी पर नजर रखने के लिए ई-चालान सिस्टम की मदद यातायात पुलिस ले रही है। सड़कों पर लगे यह हाई-टेक कैमरे खुद-ब-खुद आपकी गाड़ी का चालान काट देते हैं। इनके जरिए चालान कटने पर वाहन मालिक को पता नहीं चलता है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको e-Challan को ऑनलाइन चेक करने का तरीका बता रहे हैं।

नई दिल्ली। सरकार ने ट्रैफिक नियमों की अनदेखी को लेकर कड़ा कदम उठाया है। हाल ही में सरकार ने ट्रैफिक नियमों के उल्लंघन पर लगने वाले जुर्माने और सजा में बदलाव किया है। इस बार सरकार ने ट्रैफिक नियम तोड़ने पर लगने वाले जुर्माने को 10 गुना बढ़ा दिया है। वहीं, ट्रैफिक चालान को आसान बनाने के लिए चौक-चौराहों पर कैमरे भी लगाए गए हैं, जो आपकी छोटी सी गलती पर भी चालान काट देते हैं। ई-चालान (e-Challan) सिस्टम से लोगों को यातायात नियमों का पालन करवाया जा रहा है। जिसे ध्यान में रखते हुए हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि अगर आपकी गाड़ी का कैरे से चालान काटता है, तो आप उसे ऑनलाइन कैसे चेक कर सकते हैं।

क्या है Traffic e-Challan?

यह एक इलेक्ट्रॉनिक चालान सिस्टम है, जिसके मदद से ट्रैफिक पुलिस अब अपने जरिए की गई कार्रवाई का डिजिटल रूप में रिकॉर्ड करती है। यह सिस्टम कैमरों के जरिए ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करने पर स्वचालित रूप से चालान काटने का काम करती है। इसे आप इस तरह से भी समझ सकते हैं कि अगर कोई वाहन ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करता है, तो यह कैमरे उसकी पहचान करके चालान तैयार कर देते हैं और इसके बारे में वाहन मालिक को एक मैसेज के जरिए बता भी देते हैं कि आपका ट्रैफिक चालान काटा गया है।

Traffic E-Challan ऑनलाइन चेक करने का तरीका

अगर आपको लगता है कि आपके वाहन का किसी कैमरे के जरिए ट्रैफिक चालान काटा जाता है, तो आप आसानी से अपने स्मार्टफोन या कंप्यूटर पर चेक कर सकते हैं। आइए जानते हैं कि आप ऑनलाइन तरीके से ट्रैफिक चालान को चेक करने की प्रक्रिया के बारे में-

आधिकारिक ट्रैफिक वेबसाइट पर जाएं: सबसे पहले आपको अपने शहर या राज्य की ट्रैफिक पुलिस की आधिकारिक वेबसाइट पर जाना होगा।

e-Challan सेक्शन पर क्लिक करें: वेबसाइट पर जाने के बाद आपको ₹e-Challan₹ या ₹Traffic Violation₹ सेक्शन पर क्लिक करना होगा।

वाहन विवरण दर्ज करें: इसके बाद आपको अपनी गाड़ी के रजिस्ट्रेशन नंबर (Vehicle Registration Number) को वहां पर दर्ज करना होगा।

CAPTCHA सही तरीके से भरें: इसके बाद आपको नीचे दिखाई दे रहे CAPTCHA को सही तरीके से भरना होगा और ₹Submit₹ पर क्लिक करना होगा।

चालान विवरण देखें: अगर आपके वाहन पर कोई चालान काटा गया है, तो वह आपकी स्क्रीन पर दिखाई देगा। इसमें चालान की पूरी जानकारी, जैसे उल्लंघन की तारीख, चालान की राशि और उल्लंघन का विवरण सभी चीजें दिखाई देगी।

भुगतान करें: अगर आप चालान का भुगतान करना चाहते हैं, तो यहीं पर आपको Pay Now का ऑप्शन दिखाई देगा, जिस पर आप क्लिक करके भुगतान कर सकते हैं।

होंडा शाइन 100 वर्सेज हीरो स्पलेंडर प्लस: इंजन, फीचर्स और परफॉर्मेंस में कौन बेस्ट

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में कम्यूटर बाइक सेगमेंट में Honda Shine 100 और Hero Splendor Plus ऑफर की जाती है। यह दोनों ही बाइक इस सेगमेंट में सबसे ज्यादा बिकती है। वहीं यह दोनों ही एक-दूसरे को कड़ी टक्कर भी देती है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको इन दोनों मोटरसाइकिल की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि कौन बेहतर है।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कम्यूटर बाइक सेगमेंट लोगों के बीच सबसे ज्यादा पॉपुलर है। इस सेगमेंट तकरीबन सभी दोपहिया बनाने वाली कंपनियां अपने मॉडल को पेश करती है। इस सेगमेंट में दो ऐसे नाम है, जो लोगों की जुबान पर हमेशा रहते हैं, वे हैं, Honda Shine 100 और Hero Splendor Plus। हाल ही में होंडा ने अपनी नई 2025 Shine 100 को लॉन्च किया है, जो कंपनी की सबसे सस्ती मोटरसाइकिल है। वहीं, हीरो की Splendor Plus इस सेगमेंट में सबसे ज्यादा बिकने वाली बाइक है। हम यहां पर आपको इन दोनों मोटरसाइकिल (Honda Shine 100 Vs Hero Splendor Plus) की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि इंजन, फीचर्स और परफॉर्मेंस के मामले में कौन बेहतर है।

1. इंजन और प्रदर्शन

स्पेसिफिकेशन
Honda Shine 100
Hero Splendor Plus
इंजन
98.98cc
97.20 cc
पावर
7500 rpm पर 7.38 PS
8000 rpm पर 8.02 PS
टॉर्क
5000 rpm पर 8.05 Nm
6000 rpm पर 8.06 Nm
गियरबॉक्स
4-स्पीड
4-स्पीड

Honda Shine 100 में 98.98cc का तो Hero Splendor Plus में 97.2 cc का इंजन दिया गया है। Shine 100 में भले ही थोड़ा बड़ा इंजन मिलता है, लेकिन Splendor Plus से थोड़ा कम पावर जनरेट करता है। वहीं, Shine 100 का अधिकतम टॉर्क 5000 rpm पर जनरेट होता है, जो Splendor Plus से 1000rpm से पहले ही हो जाता है। इसकी वजह से शुरुआत में Shine 100 थोड़ी तेज जरूर हो सकती है, लेकिन बाद में Splendor Plus से पीछे हो सकती है।

2. सस्पेंशन और ब्रेकिंग

स्पेसिफिकेशन
फ्रेम
डायमंड टाइप
ट्यूबलर डबल क्रैडल
फ्रंट सस्पेंशन
टेलेस्कोपिक
टेलेस्कोपिक
रियर सस्पेंशन
प्रीलोड एडजस्टेबिलिटी के साथ ट्विन रियर शॉक
फ्रंट ब्रेक
Drum 130 mm
Drum 130 mm
रियर ब्रेक
Drum 110mm
Drum 130 mm
फ्रंट टायर
2.75-17
80/100-18
रियर टायर
3.00-17
80/100-18

दोनों ही बाइक में समान सस्पेंशन सेटअप दिया जाता है, जो रोजाना के कामकाज के लिए पर्याप्त है।

सालों से चला रहे हैं कार, नहीं जानते सही से बैठने का तरीका, परेशानी के साथ होते हैं ये नुकसान

परिवहन विशेष न्यूज

अक्सर लोग कार तो चलाते हैं लेकिन इस दौरान पीठ में काफी दर्द महसूस होता है। अगर आपके साथ भी कार चलाते हुए ऐसी समस्या होती है तो इस बात की पूरी संभावना है कि ड्राइविंग के दौरान आपके बैठने का तरीका सही नहीं हो। कार चलाते हुए किस तरह से बैठना आपके और आपकी सेहत के लिए बेहतर हो सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। कार चलाना तो हर किसी को थोड़ी प्रेक्टिस के बाद आ जाता है। लेकिन कार चलाते हुए सही तरह से बैठने की जानकारी काफी कम लोगों को होती है। सही तरह से बैठकर कार न चलाने के कारण लंबे समय में कई तरह की समस्याएं शुरू हो जाती हैं, जिनके कारण कार चलाना काफी मुश्किल हो जाता है। कार चलाते हुए किस तरह से बैठना (Car Driving Tips) चाहिए। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

ज्यादा पीछे न झुकाएं सीट

कार चलाते हुए आपको लंबे समय तक सीट पर ही बैठना होता है। इसलिए सीट को पीछे की ओर ज्यादा झुकाना नहीं चाहिए। जानकारों के मुताबिक अगर आप कार चलाते हुए सीट को 100 से 110 डिग्री के आस-पास तक रिक्लाइन (Seatback reclined at 100-110°) करते हैं तो इससे आपको आराम तो मिलता ही है साथ ही पीठ में समस्या नहीं होती।

स्टेयरिंग व्हील से बनाएं दूरी

कुछ लोग कार चलाते हुए स्टेयरिंग के काफी पास रहते हुए कार को चलाते हैं। ऐसा करना न सिर्फ हादसे के समय आपको ज्यादा नुकसान पहुंचा सकता है बल्कि इससे आपके शरीर को भी नुकसान पहुंचता है। जानकारों के मुताबिक अगर कार चलाते हुए स्टेयरिंग से 10 इंच के आस-पास की दूरी (At least 10 inches from the steering wheel for safety) रखी जाए तो इससे कार चलाने में आसानी तो होती ही है साथ ही सुरक्षा भी मिलती है।

लोअर बैक का रखें ध्यान

कार चलाते हुए कई लोग अपनी लोअर बैक का ध्यान नहीं रखते हैं। इससे उस एरिया में दर्द होने लगता है और लगातार कार चलाने में समस्या होती है। इसके लिए जब भी सीट पर बैठें तो अपने लोअर बैक को अच्छी तरह से सीट के पास रखें। इस तरह आपको ज्यादा बेहतर लंबर सपोर्ट (Lower back fully supported with lumbar support) मिलेगा और कार में ज्यादा समय तक बैठने में आसानी होगी।

पैडल दबाने का सही तरीका जानें

अगर आप अपनी सीट के साथ ही ऊपर बताई बातों का पालन करते हैं तो पैडल दबाने का सही तरीका खुद ही आ जाएगा। कार चलाते हुए पैडल दबाते समय घुटनों का 120 डिग्री के आस-पास होना जरूरी (Knees bent at 120° when pressing pedals) होता है। ऐसा होता है तो न सिर्फ आप अच्छी तरह से पैडल दबा सकते हैं, बल्कि आपको इसके लिए ज्यादा मेहनत भी नहीं करनी पड़ती।

कितनी दमदार होगी फॉक्सवेगन टाइगुन R-Line, लॉन्च से पहले सामने आ गई इंजन से फीचर्स तक की जानकारी

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। जर्मनी की वाहन निर्माता Volkswagen की ओर से भारतीय बाजार में जल्द ही नई एसयूवी के तौर पर Volkswagen Tiguan R-Line को लॉन्च किया जाएगा। लॉन्च से पहले एसयूवी के इंजन, पावर, फीचर्स और डिजाइन की जानकारी सामने आ गई है। इसमें कितना दमदार इंजन मिलेगा, किस तरह के फीचर्स और डिजाइन को दिया जाएगा। कब तक इसे लॉन्च किया जाएगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

जल्द लॉन्च होगी नई एसयूवी

फॉक्सवेगन की ओर से भारत में जल्द ही नई एसयूवी को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। एसयूवी के लॉन्च से पहले एसयूवी के कुछ फीचर्स और इंजन की जानकारी सामने आ गई है।

कितना दमदार होगा इंजन

कंपनी की ओर से एसयूवी के लॉन्च से पहले आधिकारिक वेबसाइट पर इंजन से जुड़ी जानकारी सार्वजनिक कर दी गई है। जानकारी के मुताबिक इस एसयूवी में दो लीटर की क्षमता के टीएसआई पेट्रोल इंजन को दिया जाएगा। जिससे इसे 204 पीएस की पावर और 320 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा।

कैसे होंगे फीचर्स

वेबसाइट पर इंजन की जानकारी के साथ ही कुछ फोटो को भी सार्वजनिक किया गया है। जिसके मुताबिक एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाएगा। इसमें फ्रंट और रियर पार्किंग सेंसर, एलईडी हेडलाइट्स, कनेक्टिड टेल लाइट्स, फ्रंट में कनेक्टिड एलईडी डीआरएल, फ्रंट में आर बैजिंग, बड़ी फ्रंट ग्रिल, साइड प्रोफाइल में आर बैजिंग, रूफ रेल और शार्क फिन एंटीना को दिया जाएगा। इंटीरियर में भी ग्रे के साथ ब्लैक-ब्लू थीम को रखा जाएगा। इसके अलावा इसमें बड़ा इंफोटेनमेंट सिस्टम, डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, ऑटो एसी, एपल कार प्ले, एंड्राइड ऑटो, ड्राइविंग के लिए मोड्स, पार्क असिस्ट, क्रूज कंट्रोल, ADAS, ड्राइविंग के लिए सामान्य और स्पोर्ट्स मोड, एबीएस, ईबीडी, छह एयरबैग जैसे कई फीचर्स को दिया जाएगा।

प्री-बुकिंग हुई शुरू

Volkswagen Tiguan R-Line के लिए कंपनी की ओर से प्री-बुकिंग को शुरू कर दिया गया है। ऑनलाइन और ऑफलाइन डीलरशिप के जरिए इस एसयूवी को प्री-बुक करवाया जा सकता है। एसयूवी को कुल छह रंगों के विकल्प में ऑफर किया जाएगा, जिसमें Persimmon Red Metallic, Nightshade Blue Metallic, Grenadilla Black Metallic, Oryx White Mother of Peral Effect, Cipressino Green Metallic और Oyster silver Metallic जैसे रंग शामिल होंगे।

कब होगी लॉन्च

कंपनी की ओर से 14 अप्रैल 2025 को औपचारिक तौर पर नई एसयूवी को भारतीय बाजार में लॉन्च कर दिया जाएगा। बाजार में इसका मुकाबला Toyota Fortuner Legender, MG Gloster, BMW X1 और जल्द लॉन्च होने वाली नई Skoda Kodiaq जैसी एसयूवी से होगा।

विजय गर्ग

क्षेत्रीय भाषा शिक्षा का विस्तार भारत की भाषाई विविधता के साथ संरेखित करते हुए, एनईपी 2025 जनादेश देता है कि उच्च शिक्षा संस्थान क्षेत्रीय भाषाओं में पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सभी पृष्ठभूमि के छात्रों के समान अवसर हों।

भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2025 - प्रमुख परिवर्तन और प्रभाव

भारत सरकार ने बहुप्रतीक्षित राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2025 का अनावरण किया है, जिसमें देश की शिक्षा प्रणाली के आधुनिकीकरण के उद्देश्य से परिवर्तनकारी परिवर्तन शुरू किए गए हैं। यह नीति डिजिटल शिक्षा, कौशल-आधारित शिक्षा, पाठ्यक्रम पुनर्गठन और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को प्राथमिकता देती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि छात्र भविष्य के नौकरी बाजार के लिए बेहतर हैं।

एनईपी 2025 की मुख्य विशेषताएं 1.। डिजिटल-फर्स्ट एप्रोच टू लर्निंग प्रौद्योगिकी के बढ़ते महत्व को पहचानते हुए, NEP 2025 AI- संचालित ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफार्मों, स्मार्ट कक्षाओं और आभासी प्रयोगशालाओं को मुख्यधारा की शिक्षा में एकीकृत करता है। ध्यान शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में छात्रों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा को सुलभ बनाने पर है।

2.। कौशल-आधारित और व्यावसायिक शिक्षा नीति व्यावहारिक कौशल, उद्यमिता और उद्योग-प्रासंगिक प्रशिक्षण पर अधिक जोर देती है। स्कूल और कॉलेज अब पेश करेंगेः

कक्षा 6 से अनिवार्य कोडिंग और डेटा विज्ञान पाठ्यक्रम। एआई, रोबोटिक्स और ग्रीन टेक्नोलॉजी जैसे उभरते क्षेत्रों में व्यावसायिक प्रशिक्षण। प्रमुख कंपनियों के सहयोग से इंटर्नशिप और प्रशिक्षु। 3। बहु-विषयक उच्च शिक्षा मॉडल वैश्विक शिक्षा प्रणालियों से प्रेरित, एनईपी 2025 अंतःविषय सीखने को बढ़ावा देता है। विश्वविद्यालय अब छात्रों को संगीत के साथ इंजीनियरिंग, या पर्यावरण विज्ञान के साथ अर्थशास्त्र जैसे विविध विषयों को संयोजित करने की अनुमति देंगे।

4। बोर्ड परीक्षाओं में बड़े बदलाव परीक्षा के तनाव और रटने की शिक्षा को कम करने के लिए, कक्षा 10 और 12 की बोर्ड परीक्षाएं अब एक मॉड्यूलर दृष्टिकोण का पालन करेंगी, संस्मरण के बजाय वैचारिक ज्ञान का परीक्षण करेंगी। इसके अतिरिक्त, छात्र अपने स्कोर को बेहतर बनाने के लिए वर्ष में दो बार बोर्ड परीक्षा दे सकते हैं।

5.। क्षेत्रीय भाषा शिक्षा का विस्तार भारत की भाषाई विविधता के साथ संरेखित करते हुए, एनईपी 2025 जनादेश देता है कि उच्च शिक्षा संस्थान क्षेत्रीय भाषाओं में पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सभी पृष्ठभूमि के छात्रों के समान अवसर हों।

6। अनुसंधान और नवाचार पर बढ़ा फोकस एनईपी 2025 विज्ञान, प्रौद्योगिकी और सामाजिक विज्ञान में नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र स्थापित करता है। छात्रों

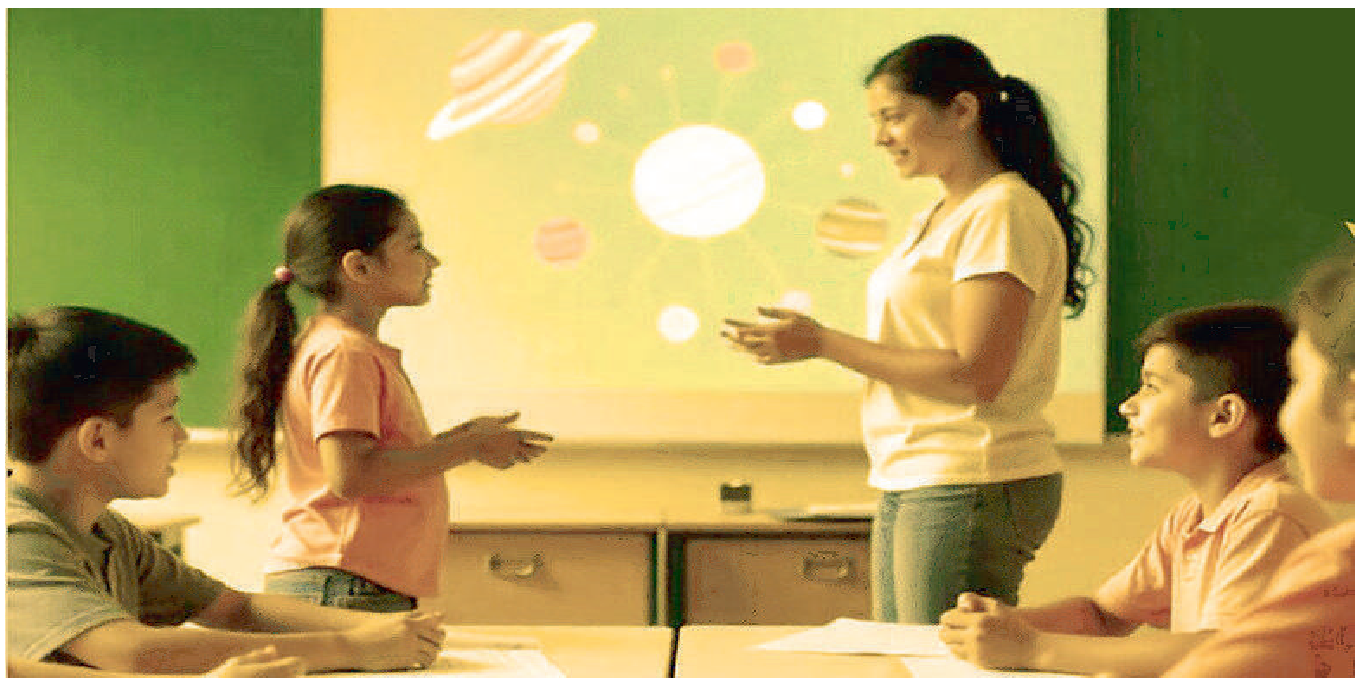

और युवा विद्वानों का समर्थन करने के लिए पीएचडी और स्नातकोत्तर अनुसंधान कार्यक्रमों के लिए अनुदान भी बढ़ाया गया है।

कम परीक्षा दबावः एक मॉड्यूलर बोर्ड परीक्षा संरचना तनाव को कम करती है और सीखने के परिणामों में सुधार करती है। ग्रेटर ग्लोबल अवसरः भारतीय डिग्री क्रेडिट-आधारित शिक्षण प्रणाली को अपनाने के साथ अधिक अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त करेगी। चुनौतियां और कार्यान्वयन रोडमैप जबकि एनईपी 2025 सुधार महत्वाकांक्षी हैं, बुनियादी ढांचे के विकास, शिक्षक प्रशिक्षण और डिजिटल पहुंच जैसी चुनौतियां बनी हुई हैं। सरकार ने सभी शैक्षणिक संस्थानों में सुचारू अनुकूलन सुनिश्चित करते हुए पांच साल की चरणबद्ध कार्यान्वयन योजना की घोषणा की है।

निष्कर्षः भारतीय शिक्षा के लिए एक नया युग भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2025 एक अधिक समावेशी, लचीली और कौशल-उन्मुख शिक्षा प्रणाली की ओर एक शानदार कदम है। डिजिटल लर्निंग, अंतःविषय शिक्षा और कौशल-आधारित प्रशिक्षण को एकीकृत करके, एनईपी 2025 का उद्देश्य तेजी से विकसित होने वाले नौकरी बाजार के लिए छात्रों को लैस करना है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

रील्स की मायावी दुनिया व साहित्य

विजय गर्ग

इन दिनों रील्स और उसके कंटेंट की अच्छे और बुरे कारणों से खूब चर्चा होती रहती है। आजकल रील्स देखना बहुत ही लोकप्रिय होता जा रहा है। चकित करने वाली बात यह है कि रील्स के विषयों का फलक इतना व्यापक है कि वो किसी को भी घंटों तक रोके रख सकता है। अब तो स्थिति यह हो गई है कि रील्स में दिखाई गई बातों को सत्य माना जाने लगा है। रील्स की दुनिया में भविष्यवक्ताओं की बाढ़ आई हुई है। कोई आपके नाम के आधार पर तो कोई आपके नाम में प्रयुक्त अक्षरों की संख्या को जोड़कर आपका भविष्य बता रहा है। कई महिलाएं भी भविष्य के बारे में बात करती नजर आएंगी। वो भी बता रही हैं। कि शुक्रवार को पति के साथ किस प्रकार का व्यवहार करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं। कोई महिला यह बताती है कि पत्नी को हर दिन पति के पाँव दबाने चाहिए, क्योंकि लक्ष्मी जी भी विष्णु जी के पांव दबाती हैं। कोई महिला यह बताती है। कि अमुक अंक लिखकर अपने घर की तिजोरी में रख दो या अमुक नंबर के नोट अगर आपने अपने घर में पैसे रखने के स्थान पर रख दिया तो आपके पास धन की कोई कमी नहीं होगी। इसके अलावा, स्वास्थ्य विषय पर भी इनके बहुत सारे रील्स हैं कि यह खाना चाहिए या फिर यह नहीं खाना चाहिए।

इतना ही नहीं, रील्स की दुनिया में बिजनेस करने के तौर तरीकों और और जमाधन को दोगुना और तिगुना तक करने के नुस्खे भी बताए जाने लगे हैं। ये सब इतने रोचक अंदाज में बताया जाता है कि देखनेवाला मोबाइल से चिपका रहता है। आमतौर पर यह देखा जाता है कि अगर रील्स देखना आरंभ कर दें तो घंटे दो घंटे तो ऐसे ही निकल जाते हैं।

कहना न होगा कि रील्स की दुनिया एक ऐसी मनोरंजक दुनिया है जो लोगों को बेहतर भविष्य का सपना भी दिखाती है। लोगों को पैसे कमाने से लेकर घर परिवार की सुख समृद्धि के नुस्खे बताती है। ये नुस्खे कितने सफल होते हैं यह पता नहीं, क्योंकि इस तरह का कोई रील देखने में नहीं आता है कि फलां नुरखे से उनका लाभ हुआ या इस तरह की कोई केस स्टडी भी अभी तक समने नहीं आई हैं कि फलां नंबर के नोट तिजोरी में रखने से उसकी आमदनी निरंतर बढ़ती चली गई। परंतु हां, इतना अवश्य है कि रील्स एक ऐसी काल्पनिक दुनिया में ले जाता है, जहां सबकुछ मोहक और मायावी लगता है।

रील्स की दुनिया को हल्के-फुल्के मनोरंजन के तौर पर लिया जाना चाहिए। लिया जा भी रहा है। लेकिन इन दिनों साहित्य, कला और कविता से जुड़े कुछ ऐसे रोल्स देखने को मिले जो चिंतित करते हैं। हाल के दिनों में कई ऐसे रील्स देखने को मिले जिनमें सेलिब्रिटी कविता पढ़ते नजर आ रहे हैं। वो कविता किसी और की पढ़ते हैं और रील्स के डिसक्रिप्शन में कवि का नाम लिख देते हैं। रोल में कहीं कवि का नाम नहीं होता है। सेलिब्रिटी की टीम उसको इंटरनेट मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म पर पोस्ट कर देती है और अश्वत्थामा हतौ नरौ.... वाली ईमानदारी के साथ वीडियो के डिसक्रिप्शन में कवि का नाम लिख देती है। होता यह है कि सेलिब्रिटी की पढ़ी गई कविताओं का वीडियो इन प्लेटफार्म्स

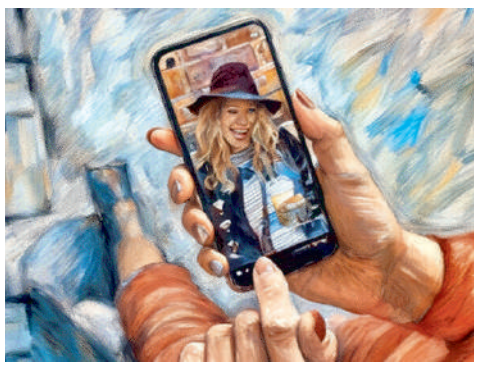

से डाउनलोड करके उनके प्रशंसक उसको फिर से उन्हीं प्लेटफार्म्स पर साझा करना आरंभ कर देते हैं। प्रशंसक अश्वत्थामा वाली ईमानदारी को समझ नहीं पाते और वो सेलिब्रिटी की कविता के नाम से ही उसे साझा करना आरंभ कर देते हैं। दिनकर जी जैसे श्रेष्ठ कवियों की कविताएं तो लोगों को पता है तो उसमें यह खेल नहीं हो पाता है, लेकिन कई नवोदित कवि की कविताएं सेलिब्रिटी के नाम से चलने लगती हैं। कवि को पता भी नहीं चलता और वह कविता सेलिब्रिटी के नाम हो जाती है। रील्स की दुनिया में इस बेईमानी से कई साहित्यिक प्रतिभा कुंद हो जा रही हैं। इसका निदान कहीं न कहीं बौद्धिक जगत को ढूंढना ही चाहिए। इंटरनेट मीडिया पर बाढ़ की तरह संचालित इन रील्स का एक और नुकसान जो साहित्य का हो रहा है, वह यह कि पौराणिक ग्रंथों से बगैर संदर्भ के किस्सों को उठाकर प्रामाणिक तरीके से पेश कर दिया जा रहा है। पिछले दिनों जब इलाहाबादिया का मामला सामने आया था तो उसके कुछ दिनों बाद एक रील मेरी नजर से गुजरा। एक बेहद लोकप्रिय व्यक्ति उसमें एक किस्सा सुना रहे थे। किस्से में वह बता रहे थे कि कालिदास अपना ग्रंथ कुमारसंभव पूरा क्यों नहीं कर पाए? उनके हिसाब से कालिदास जब कुमारसंभव में पार्वती और शंकर जी की रतिक्रिया के बारे में लिखने जा रहे थे, तब पार्वती जी को पता चल गया। उन्होंने सरस्वती जी को बुलाया और कहा कि यह कौन सा कवि है और क्या लिखने जा रहा है। इसे रोकना होगा। फिर किस्सागोई के अंदाज में यह प्रसंग आगे बढ़ता है। आगे वह बताते हैं कि सरस्वती जी ने क्रोधित होकर उनको श्राप दे दिया और वो बीमार हो गए। इस कारण से कुमारसंभव पूरा नहीं हो पाया।

यहां हमें यह समझना चाहिए कि कालिदास बीमार अवश्य हुए थे। उन्हें पक्षाघात हो गया और वह भी सरस्वती के श्राप के कारण, परंतु इसे कहां से उद्धृत किया गया था, यह तथ्य भी सामने आना चाहिए। इस पूरे प्रसंग में शब्द कुछ अलग हो सकते हैं, परंतु उनका भाव यही था। इस तरह के प्रकरणों में चिंता की बात यह है कि यह पूरा प्रसंग जैसे सुनाया गया, वह विश्वसनीय सा लगता है। इसे सुनकर नई पीढ़ी के लोगों में से कई सच मान सकते हैं, विशेषकर वे जो उनके प्रशंसक हैं। इससे तो एक अलग तरह का इतिहास बनता है। बौद्धिक समाज को इस तरह के प्रसंगों पर विचार करते हुए इस पर विमर्श को बढ़ावा देना चाहिए। चिंता तब और अधिक होती है, जब इस तरह के रील बनानेवाले लोग लोकप्रिय होते हैं। रील्स की दुनिया से पहले फेसबुक ने साहित्य का बहुत नुकसान किया, विशेषकर कविता का फेसबुक के लाइक्स और कमेंट ने कवियों और रचनाकारों के दिमाग में यह बैठा दिया कि अब उनको आलोचकों की आवश्यकता ही नहीं है। वो सीधे पाठक तक पहुंच रहे हैं। ऐसे लोग यह मानते थे कि आलोचक पाठकों तक पहुंचने का एक जरिया है। जबकि आलोचकों की भूमिका उससे कहीं अलग होती है। आलोचक रचना के अंदर प्रवेश करके उसकी गांठों को खोलकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है। रचनाओं में अंतर्निहित भावों को आसान शब्दों में पाठकों को समझाने का प्रयत्न करता है। इससे रचनाकार और पाठक के बीच एक ऐसा संबंध बनता था जो फेसबुक के कमेंट से नहीं बन सकता है। फेसबुक पर जिस तरह के कमेंट आते हैं, उनमें से अधिकतर तो प्रशंसा के ही होते हैं जो रचना का न तो आकलन कर पाते हैं और न ही रचना के भीतर प्रवेश करके उसकी परतों को पाठकों के लिए खोलते हैं। कुल मिलाकर जो परिस्थितियाँ बन रही हैं उनमें प्रमाणिक स्रोतों के आधार पर तथ्यों को प्रस्तुत करने के लिए साहित्यकारों को आगे आना होगा। प्रो. जगदीश्वर चतुर्वेदी वर्षों से आह्वान कर रहे हैं कि साहित्यकारों को इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म्स पर लिखना चाहिए। उनके नहीं लिखने से अनर्गल लिखनेवालों का बोलबाला होता जा रहा है। तकनीक को साहित्यकारों को अपनाना चाहिए और उसके नए माध्यमों को पाठकों तक पहुंचने का औजार बनाना चाहिए।

एक वो जमाना था, एक यह जमाना

विजय गर्ग

नहीं, हम उस जमाने को बुजुर्गों की तरह से याद नहीं करना चाहते- अतीतजीवी होकर। लेकिन फिर भी याद करना चाहिए ताकि अपने जमाने का पता चले कि कैसा चल रहा है। कोई फर्क है भी या नहीं। वैसे फर्क तो है जी। इसके लिए दो दृश्य देखिए, पहला दृश्य—दुनिया के सम्राट अर्थात अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप के समक्ष यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की हाजिर होते हैं। सम्राट को पता है कि कभी वह एक कॉमेडियन रहा है सो सम्राट उसे जोकर ही मानता है। सम्राट के दरबारी भी उसे जोकर ही मानते हैं और उसकी खूब लानत-मलानत करते हैं।

सम्राट के मुख्य दरबारी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस जेलेंस्की को लताड़ते हैं- बड़े नाशुक्रे आदमी हो। तुमने अभी तक सम्राट के प्रति कृतज्ञता तक जाहिर नहीं की। कृतघ्न हो तुम। जेलेंस्की ने कुछ सफाई देने की कोशिश की तो सम्राट ने डपट दिया- चुप रहो तुम। हमारे साथ खेल मत खेलो। सम्राट द्वारा लगायी गयी डांट से उत्साहित होकर दरबारियों ने फिर खिंचाई शुरू की—तुम्हारे पास कोट भी नहीं है क्या। एकदम ही भिखमंगे हो क्या!

अब जरा अतीत का एक दृश्य देखिए—दुनिया के सम्राट अर्थात इंगलिस्तान के सम्राट से मिलने गांधीजी पहुंचते हैं। बेशक उन्हें दरबार का, मुलाकात का ड्रेस कोड बता दिया था। लेकिन वे अपनी अधनंगी अवस्था में, अपनी लंगोटी में ही वहां पहुंचते हैं। गांधीजी को देखा तो सम्राट को चर्चिल की कही हुई बात याद आयी- यह तो सममुच ही अधनंगा फकीर है। उनसे पूछा गया- आप समुचित कपड़े पहनकर क्यों नहीं आए। गांधीजी ने जवाब दिया-हुजूर मेरी जनता को नंगा करके उसके हिस्से के सारे कपड़े तो आप पहने बैठे हैं। इन दोनों दृश्यों में क्या फर्क है- जेलेंस्की युद्ध लड़ रहे हैं- एक हिंसक युद्ध। गांधीजी भी युद्ध लड़ रहे थे- लेकिन अहिंसक युद्ध। गांधीजी के पास नैतिक ताकत थी- अहिंसा की, सच्चाई की, जनता के हक की, अधिकार की। इसीलिए गांधी दुनिया के सम्राट को जवाब दे पाए- बेहिचक। दो टूक। खरा।

जेलेंस्की के पास यह ताकत नहीं थी। इसलिए वह अपनी लानत-मलानत करवाता रहा। बिलबिलाता रहा। गिड़गिड़ाता रहा। गांधी से मुंहजोरी करने की सम्राट की हिम्मत नहीं थी। लेकिन जेलेंस्की को सम्राट डराता रहा, धमकाता रहा। गांधीजी, सम्राट से अपनी जनता के हक और अधिकार मांगते रहे। लेकिन जेलेंस्की युद्ध के लिए मदद मांगता रहा। सम्राट यह भी था। सम्राट वह भी था। अपनी जनता का नुमाइंदा जेलेंस्की भी था। अपनी जनता के नुमाइंदे गांधीजी भी थे। लेकिन दोनों में फर्क था। गांधी के पास सच्चाई की, अहिंसा की, नैतिकता की ताकत थी। जेलेंस्की के पास इनमें कुछ भी नहीं था।

बैल की पूँछ

विजय गर्ग

एक नौजवान, एक किसान की बेटी से शादी करने की इच्छा लेकर किसान के पास पहुँचा।

किसान ने गौर से उसकी ओर देखा और मुस्कुराते हुए कहा, "शादी हो सकती है, लेकिन एक शर्त है। अगर तुम इसे पूरा कर सको, तो मेरी बेटी तुम्हारी होगी।"

युवक ने उत्सुकता से पूछा, "क्या शर्त है?"

किसान ने समझाया,

"तुम मेरे खेत में जाओ। मैं तीन बैल छोड़ूँगा—अगर तुम इनमें से किसी भी एक की पूँछ पकड़ लो, तो मेरी बेटी से तुम्हारी शादी पक्की!"

युवक को चुनौती रोमांचक लगी, और वह खुशी-खुशी खेत में जा खड़ा हुआ।

पहला दरवाजा खुला

जैसे ही किसान ने दरवाजा खोला, एक बेहद विशाल और खतरनाक बैल गरजता हुआ बाहर आया। युवक डर के मारे एक ओर हट गया और सोचने लगा, ₹चलो, अगला बैल सही रहेगा!"

दूसरा दरवाजा खुला

इस बार पहले से भी ज़्यादा भयंकर बैल निकला। युवक के पसीने छूट गए! उसने फिर फैसला किया, ₹इससे भी

बचना ही बेहतर है। तीसरे बैल का इंतज़ार करता हूँ!₹

तीसरा दरवाजा खुला

अब युवक के चेहरे पर मुस्कान आ गई। इस बार एक कमजोर, मरियल सा बैल निकला। उसने खुशी-खुशी अपनी मुद्रा बनाई, कमर कसी और पूँछ पकड़ने को तैयार हो गया।

लेकिन इस बैल की पूँछ ही नहीं थी!

युवक ने अपना सिर पकड़ लिया। अब पछताने के अलावा कोई चारा नहीं था। खाली हाथ उसे लौटना पड़ा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

पेंशन की लड़ाई: कर्मचारियों का हक़ या सरकारी बोझ?

भारत में 2004 से पहले सरकारी कर्मचारियों को पुरानी पेंशन योजना (OPS) के तहत पेंशन दी जाती थी। इसके तहत– सेवानिवृत्ति के बाद आजीवन निश्चित पेंशन मिलती थी। अंतिम वेतन का 50% पेंशन के रूप में दिया जाता था। महंगाई भत्ता (DA) जुड़ा होता था, जिससे समय-समय पर पेंशन बढ़ती रहती थी। सरकार द्वारा पूरी फंडिंग होती थी, कर्मचारी का योगदान नहीं होता था। लेकिन 1 अप्रैल 2004 से NPS लागू किया गया, जिससे नई भर्ती वाले सरकारी कर्मचारियों के लिए यह प्रणाली बंद हो गई।

डॉ. सत्यवान सौरभ

भारत में पुरानी पेंशन योजना (OPS) की बहाली एक महत्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक मुद्दा बन चुका है। यह केवल सरकारी कर्मचारियों का ही नहीं, बल्कि देश की वित्तीय नीति और सामाजिक सुरक्षा का भी विषय है। 2004 में पुरानी पेंशन योजना को समाप्त कर नई पेंशन योजना (NPS) लागू की गई, लेकिन बीते कुछ वर्षों में OPS की बहाली को लेकर कर्मचारियों में व्यापक आंदोलन और राजनीतिक बहस छिड़ी हुई है।

पुरानी पेंशन योजना (OPS) क्या थी?

कल्पना कीजिए कि आपकी नौकरी के बाद भी आपको हर महीने एक निश्चित आय मिलती रहे, जैसे एक जादुई खजाना जो कभी खाली न हो! यही थी OPS – एक डिफाइंड बेनिफिट पेंशन योजना, जिसमें सरकारी कर्मचारी सेवानिवृत्ति के बाद अपने अंतिम वेतन का 50% पेंशन के रूप में प्राप्त करते थे। इसमें महंगाई भत्ता (DA) भी जोड़ा जाता था, जिससे पेंशन समय-समय पर बढ़ती रहती थी। इस योजना के तहत सरकार पेंशन की पूरी

गारंटी देती थी और कर्मचारी को कोई योगदान नहीं देना पड़ता था।

नई पेंशन योजना (NPS) और विवाद

2004 में केंद्र सरकार ने OPS को समाप्त कर NPS लागू किया, जो एक डिफाइंड कंट्रीब्यूशन योजना है। इसमें कर्मचारियों को अपनी सैलरी का एक निश्चित हिस्सा पेंशन फंड में निवेश करना होता है, जिसे बाजार आधारित रिटर्न पर निर्भर रहना पड़ता है। अब कल्पना कीजिए कि आपकी पेंशन स्टॉक मार्केट की लहरों पर तैर रही हो – कभी ऊपर, कभी नीचे! यही कारण है कि NPS को लेकर कर्मचारियों में असुरक्षा की भावना बनी रहती है, क्योंकि इसमें कोई गारंटीशुदा पेंशन नहीं होती।

OPS बहाली की माँग क्यों बढ़ रही है?

आर्थिक असुरक्षाः NPS में पेंशन की राशि बाजार के प्रदर्शन पर निर्भर करती है, जिससे सेवानिवृत्त कर्मचारियों को स्थायी और निश्चित आय नहीं मिलती। OPS में पेंशन महंगाई भत्ते के साथ बढ़ती थी, जबकि NPS में यह लाभ नहीं है। राजस्थान, छत्तीसगढ़, पंजाब, झारखंड और हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों ने OPS को लागू करने की घोषणा की है। लाखों सरकारी कर्मचारी हड़ताल और विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं, जिससे सरकार पर दबाव बढ़ रहा है। वृद्धावस्था में आर्थिक स्थिरता के लिए OPS को एक आवश्यक साधन माना जाता है। NPS के तहत कई सेवानिवृत्त कर्मचारी अपने खर्चों को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यः अन्य देशों में पेंशन प्रणाली

दुनिया के कई देशों में पेंशन प्रणाली को लेकर अलग-अलग मॉडल अपनाए गए हैं। कुछ देशों ने सरकारी कर्मचारियों के लिए OPS जैसी योजनाएं जारी रखी हैं, जबकि अन्य देशों ने निजी निवेश आधारित प्रणाली अपनाई है। अमेरिका में सोशल सिक्योरिटी सिस्टम के तहत सरकारी और निजी कर्मचारियों को रिटायरमेंट के बाद निश्चित पेंशन मिलती है। हालांकि, इसमें सरकारी योगदान सीमित होता है और व्यक्तिगत निवेश भी आवश्यक होता है। ब्रिटेन में स्टेट पेंशन योजना लागू है, जिसमें सरकार न्यूनतम पेंशन सुनिश्चित करती है, लेकिन अतिरिक्त पेंशन के लिए निजी योजनाओं को प्रोत्साहित किया जाता है।

जर्मनी में सार्वजनिक पेंशन प्रणाली काफी मजबूत है, जहाँ कर्मचारी और नियोक्ता दोनों अनिवार्य योगदान देते हैं, जिससे सुनिश्चित पेंशन मिलती है। फ्रांस में भी डिफाइंड बेनिफिट पेंशन प्रणाली मौजूद है, जिसमें सरकार प्रमुख भूमिका निभाती है और कर्मचारियों को स्थायी पेंशन प्रदान की जाती है।

यहाँ सुपर एशन फंड प्रणाली लागू है, जिसमें कर्मचारी और नियोक्ता दोनों नियमित निवेश करते हैं, और रिटायरमेंट के बाद यह राशि पेंशन के रूप में दी जाती है।

सांसदों और विधायकों को पेंशन क्यों?

एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह भी उठता है कि जब सरकारी कर्मचारियों की पेंशन समाप्त कर दी गई, तो सांसदों और विधायकों को आज भी पेंशन क्यों दी जाती है? क्या सांसद और विधायक अपने कार्यकाल के दौरान नीतिगत निर्णय लेते हैं, जिसके लिए उन्हें विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं कई राज्यों में विधायकों को एक कार्यकाल के बाद ही आजीवन पेंशन मिलती है, जो सामान्य सरकारी कर्मचारियों के नियमों से अलग है। कई पूर्व सांसद और विधायक पहले से ही सरकारी सेवाओं में कार्यरत रहे होते हैं और उन्हें दोहरी पेंशन मिलती है। कई कर्मचारी संगठनों का तर्क है कि जब सरकारी कर्मचारियों की पेंशन समाप्त की गई, तो जनप्रतिनिधियों को भी उसी श्रेणी में रखा जाना चाहिए। सरकारी खजाने पर सांसदों और विधायकों की पेंशन का बोझ बढ़ता जा रहा है, जिससे इसे समाप्त करने की माँग तेज हो रही है।

OPS बहाली से संभावित लाभ, वित्तीय प्रभाव और चुनौतियाँ

OPS की बहाली से सरकारी वित्तीय बोझ बढ़ सकता है। सरकार को अपने बजट का बड़ा हिस्सा पेंशन भुगतान के लिए आवंटित करना होगा, जिससे अन्य विकास योजनाओं पर असर पड़ सकता है। कुछ अर्थशास्त्रियों का मानना है कि OPS लागू करने से दीर्घकालिक आर्थिक असंतुलन हो सकता है। एक स्थायी पेंशन योजना से कर्मचारियों को सुरक्षा मिलेगी और वे अपने भविष्य को लेकर निश्चिंत रहेंगे। सरकारी नौकरियों की ओर लोगों का रुझान बढ़ेगा, जिससे योग्य और प्रतिभाशाली लोग प्रशासनिक सेवाओं में शामिल होंगे। जब सेवानिवृत्त कर्मचारियों को सुनिश्चित आय मिलेगी, तो वे अपनी क्रय शक्ति बनाए रखेंगे, जिससे बाज़ार में स्थिरता बनी रहेगी। OPS से कर्मचारियों को वृद्धावस्था में गरिमा के साथ जीवनयापन करने का अवसर मिलता है।

निष्कर्ष

पुरानी पेंशन बहाली केवल एक कर्मचारी कल्याण नीति नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक और आर्थिक मुद्दा है। सरकार को संतुलित दृष्टिकोण अपनाते हुए ऐसी नीति बनानी होगी, जो कर्मचारियों की आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करे और साथ ही सरकारी वित्तीय संतुलन भी बनाए रखे। OPS बहाली का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि सरकार इस मुद्दे का समाधान किस प्रकार निकालती है और क्या कोई मध्य मार्ग संभव है।

'जब तक पुराने नियम समझते हैं, तब तक...', व्यापारियों के लिए क्यों झंझट बना जीएसटी?

जीएसटी प्रणाली लागू होने से कारोबारियों को उम्मीद थी कि लालफीताशाही के दौर से मुक्ति और एक सुगम तथा किफायती व्यवस्था मिल जाएगी मगर जीएसटी प्रणाली लागू होने के बावजूद व्यापारी-कारोबारी जीएसटी नियम में हो हर महीने हो रहे बदलाव से परेशान हैं। कारोबार-व्यापार से जुड़े लोगों के जीएसी प्रणाली में हो रहे लगातार बदलाव पर चिंता जाहिर की है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: 30 जून-01 जुलाई, 2017 की मध्य रात्रि को संसद की संयुक्त बैठक में तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मौजूदगी में देश में कर ढांचे में क्रांतिकारी बदलाव का घंटा बजाया तो यह माना गया कि अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था से जुड़े हजारों टैक्स अधिकारियों की नींद टूट जाएगी।

साथ ही जीएसटी प्रणाली लागू होने से कारोबारियों को लालफीताशाही के दौर से मुक्ति और एक सुगम तथा किफायती व्यवस्था मिल जाएगी और उन पर टैक्स संबंधी बोझ कम होगा। मगर जीएसटी प्रणाली लागू होने के करीब आठ साल होने के बावजूद व्यापारी-कारोबारी जीएसटी नियम में हर महीने हो रहे बदलाव से लेकर विभागीय कर्मचारियों के बर्ताव से परेशान और क्षुब्ध दिखाई दे रहे हैं।

नियमों में लगातार होने वाले बदलाव और एक ही प्रकार के उत्पादों पर अलग-अलग जीएसटी की दरें होने से कारोबारियों से जीएसटी रिटर्न भरने में गलती हो जाती है और फिर उन्हें नोटिस से लेकर अन्य कार्रवाई का सामना करना पड़ता है। जीएसटी के कई जटिल प्रविधानों को समझने के लिए कारोबारी विशेषज्ञों का सहारा लेने को बाध्य हो रहे हैं जिसकी एवज में उन्हें मोटी फीस चुकानी पड़ रही है।

क्या है कारोबारियों की शिकायत?

कारोबार-व्यापार से जुड़े लोगों के अनुसार इसे छोटे कारोबारियों की लागत बढ़ रही है। कारोबारियों की शिकायत है कि वे पूरे माह जीएसटी रिटर्न भरने में लगे रहते हैं अन्यथा लाखों की देनदारी का नोटिस आ जाता है।

कनफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स के अध्यक्ष बी.सी. भरतिया कहते हैं,''महीने के 10 तारीख को पहला रिटर्न भरो, 12-13 तारीख तक उस रिटर्न का विभाग से जवाब आता है, फिर उसे वेरिफाइ करो और फिर 20 तारीख को फाइनल रिटर्न भरो। एक-एक बिक्री और एक-एक खरीद को रजिस्टर करना होता है। आपदा या विशेष परिस्थिति में अगर 20 तारीख तक जीएसटीआर दाखिल नहीं किया गया तो सिस्टम अपने आप जुर्माना लगा देता है। फिर उसे वापस लेने के लिए चक्कर लगाओ।"

भरतिया कहते हैं,

जब जीएसटी प्रणाली लागू हुई थी तो उन्हें यह बताया गया था कि पूरे देश के व्यापारी सिर्फ अपनी-अपनी बिक्री की जानकारी सरकार को देंगे। इससे सरकार के पास खरीदारी का पूरा ब्योरा अपने-आप आ जाएगा। कारोबारियों के मुताबिक साधारण पापकार्न की जीएसटी दरें और चाकलेटी क्रीम लगे पापकार्न की जीएसटी दरें अलग-अलग है। रोटी की दर अलग है तो पराठे की अलग। अलग-अलग बन और बटन लेने पर जीएसटी दर कम है और दोनों को साथ मिलाने पर यह दर बढ़ जाती है। इस प्रकार की भ्रामक स्थिति में कारोबारी गलत रिटर्न भर देते हैं और फिर उन्हें देनदारी का नोटिस आ जाता है और विभागीय कर्मचारी कारोबारियों के पीछे पड़ जाते हैं।

कारोबारियों को आ रही इनपुट टैक्स क्रेडिट मिलने में समस्याएं

कारोबारियों के मुताबिक शुरू में जीएसटी का प्रारूप साधारण था, लेकिन टैक्स चोरी पकड़ने के नाम पर इनमें नए-नए प्रविधान जुड़ते चले गए। व्यापारियों की सबसे बड़ी समस्या इनपुट टैक्स क्रेडिट मिलने में हो रही दिक्कतों को लेकर है।

कोई कारोबारी किसी दूसरे कारोबारी से माल खरीदता है और दूसरा कारोबारी अगर समय पर जीएसटी रिटर्न नहीं भरता है तो पहले कारोबारी का इनपुट टैक्स रिटर्न फंस जाता है। अगर दूसरा कारोबारी फ्राड निकल जाता है तो भी पहले कारोबारी को इनपुट टैक्स क्रेडिट नहीं मिल पाता है।

कारोबारियों की शिकायत है जो कारोबारी फ्राड कर रहे हैं या जीएसटी रिटर्न फाइल नहीं कर रहे हैं, उन्हें भी सरकार ने ही जीएसटी व्यवस्था में पंजीकृत किया है, फिर इसमें उनकी क्या गलती है कि उनका इनपुट टैक्स क्रेडिट रोक लिया जाता है।

'जब तक पुराने नियम समझते हैं, तब तक नए नियम आ जाते हैं'

दिल्ली सदर बाजार व्यापारी संघ के अध्यक्ष देवराज बवेजा कहते हैं, "पिछले आठ सालों में सैकड़ों नियम बदल चुके हैं और जब तक व्यापारी पुराने नियम को समझता है, नए नियम आ जाते हैं। एचएस कोड को भी समझना छोटे व्यापारियों के लिए परेशानी की बात है।"

असल में जिन वस्तुओं का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापार होता है, उन सभी का हार्मोनाइज्ड सिस्टम या एचएस कोड तय किया जाता है और उन वस्तुओं की जीएसटी दरें भी एचएस कोड के हिसाब से तय होती है।

टैक्स एक्सपर्ट और चार्टर्ड एकाउंटेंट एम.के. गुप्ता कहते हैं कि पहले कारोबारियों के जीएसटी का ऑडिट अनिवार्य था। अब ऑडिट की अनिवार्यता समाप्त कर दी गई है। ऐसे में कारोबारी गलती कर बैठते हैं और दो-तीन साल पुरानी गलती से जुड़े उन्हें नोटिस आ रहे हैं तथा उनकी परेशानियों में इजाफा कर रहे हैं।

तूफानी मूड में शेयर बाजार, सेंसेक्स ने लगाई 730 अंक की छलांग; इस वजह से आई तेजी

सेंसेक्स और निफ्टी में आज फिर उछाल देखने को मिली है। निफ्टी 200 अंक चढ़ गया। बीते हफ्ते जबरदस्त बढ़त लेने के बाद आज बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज का 30 शेयरों वाला Sensex खुलने के साथ ही 400 अंक से ज्यादा उछला और बाद में 700 अंक पार कर गया। वहीं निफ्टी भी तेजी के साथ 23 850 के पार चला गया।

नई दिल्ली। भारतीय शेयर बाजार में लगातार 7 वें दिन जबरदस्त तेजी देखने को मिली है। सेंसेक्स और निफ्टी में उछाल देखने को मिली है। सेंसेक्स 78500 के करीब पहुंच गया है, अभी 730 अंक की उछाल के साथ बढ़ा है।

निफ्टी 250 अंक पहुंच गया। बीते हफ्ते जबरदस्त बढ़त लेने के बाद आज बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज का 30 शेयरों वाला Sensex खुलने के साथ ही 400 अंक से ज्यादा उछला।

निफ्टी इंडेक्स करीब 80 अंकों की तेजी के साथ 23800 के पास पहुंच गया है। एशियाई बाजारों में जापान का निक्केई हरे निशान में कारोबार कर रहा। वहीं, अमेरिकी वायदा बाजार सपाट ट्रेड कर रहे हैं। कोटक महिंद्रा बैंक, एनटीपीसी, SBI, टेक महिंद्रा जैसे स्टॉक्स 4.5 प्रतिशत तक पहुंच गए हैं।

क्या कहता है BSE का सेंसेक्स?

शेयर मार्केट (Stock Market) के ओपन होने के साथ ही बीएसई का सेंसेक्स अभी 78,669.43 के स्तर पर है। वहीं कल ये अपने पिछले बंद 76,905.51 की तुलना में जोरदार तेजी लेते हुए 77,456.27 के स्तर पर खुला और देखते ही देखते 77,498.29 तक पहुंच गया था। Sensex की ये रफ्तार कारोबार बढ़ने के साथ और बढ़ती गई। अभी तक 1000 अंक की उछाल के साथ 77,907.42 के स्तर पर कारोबार करता दिखा।

मार्केट में क्यों आ रहा उछाल?

आरबीआई के रेट कट की उम्मीदः अमेरिकी फेड की बैठक के बाद अब आरबीआई से भी रेट कट की चर्चा जोरे पर हैं।

विदेशी और घरेलू निवेशक शेयर बाजार में जमकर पैसा लगा रहे हैं।

ग्लोबल कंपनी ने भारत की GDP और महंगाई को लेकर पॉजिटिव ऑउटलुक दिया है।

भारतीय स्टॉक मार्केट ने फिर दिखाई अपनी ताकत, दुनियाभर के बाजारों को पीछे छोड़ बना टॉप परफॉर्मर

दुनिया के दस सबसे बड़े इक्विटी बाजारों में भारत का शेयर बाजार मार्च में सबसे ज्यादा बढ़ा। डॉलर के संदर्भ में बात करें तो इसने 9.4 प्रतिशत की बढ़त दर्ज की। शेयर बाजार के आंकड़ों के अनुसार बॉंबे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) में सूचीबद्ध सभी कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण फरवरी के अंत में लगभग 4.39 ट्रिलियन डॉलर था जो अब बढ़कर लगभग 4.8 ट्रिलियन डॉलर हो गया।

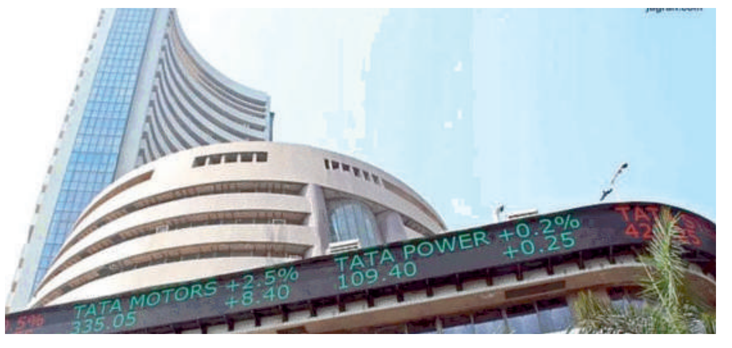

मुंबई। दुनिया के दस सबसे बड़े इक्विटी बाजारों में भारत का शेयर बाजार मार्च में सबसे ज्यादा बढ़ा। डॉलर के संदर्भ में बात करें तो इसने 9.4 प्रतिशत की बढ़त दर्ज की। लगातार पांच महीनों की गिरावट के बाद यह चार सालों में सबसे मजबूत रैली है।

शेयर बाजार के आंकड़ों के अनुसार, बॉंबे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) में सूचीबद्ध सभी कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण फरवरी के अंत में लगभग 4.39 ट्रिलियन डॉलर था, जो अब बढ़कर लगभग 4.8 ट्रिलियन डॉलर हो गया।

मई 2021 के बाद यह सबसे बड़ी मासिक उछाल है। सभी प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में जहां भारत ने सबसे अच्छा प्रदर्शन किया, वहीं जर्मनी 5.64 प्रतिशत की वृद्धि और 2.81 ट्रिलियन डॉलर से अधिक के बाजार पूंजीकरण के साथ दूसरे स्थान पर रहा। जापान और हांगकांग के शेयर बाजारों में क्रमशः 4.9 प्रतिशत और चार प्रतिशत की वृद्धि हुई।

इन देशों के शेयर बाजारों में भी आई तेजी

फ्रांस, यूनाइटेड किंगडम और कनाडा के शेयर बाजारों में भी मामूली वृद्धि दर्ज की गई। इसके विपरीत, दुनिया के सबसे बड़े इक्विटी बाजार अमेरिका में 3.7 प्रतिशत की गिरावट देखी गई, जबकि सऊदी अरब के बाजार में 4.4 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। मार्च में भारतीय इक्विटी बेंचमार्क सेंसेक्स और निफ्टी में 5-5 प्रतिशत की तेजी आई, जबकि व्यापक बीएसई मिडकैप और स्मालकैप सूचकांकों में क्रमशः 8.4 प्रतिशत और 9.8 प्रतिशत की तेज बढ़त दर्ज की गई।

आरबीआई द्वारा जल्द ही ब्याज दरों में कटौती की उम्मीद के साथ अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा 2025 में दो बार ब्याज दरों में कटौती के संकेत ने भी निवेशकों की धारणा में सुधार किया है।

रेपो रेट में एक और कटौती कर सकता है आरबीआई

भारत की खुदरा मुद्रास्फीति आरबीआइ के मध्यम अवधि के लक्ष्य चार प्रतिशत से नीचे रही है। इससे इन उम्मीदों को बल मिला है कि केंद्रीय बैंक अप्रैल में होने वाली मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की बैठक में रेपो रेट में एक और कटौती का एलान कर सकता है। विश्लेषकों को आरबीआइ से सिस्टम में नकदी बढ़ाने के उपायों के एलान की भी उम्मीद है।

केंद्रीय बैंक ने पहले ही रेपो नीलामी और खुले बाजार परिचालन जैसे विभिन्न कदमों के माध्यम से बैंकिंग प्रणाली में लगभग तीन लाख करोड़ रुपये डाले हैं। बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि बाजार में तेजी के बाद थोड़े समय के लिए निवेश करने वाले निवेशक मुनाफावसूली कर सकते हैं, जबकि दीर्घकालिक निवेशकों को बाजार में बने रहना चाहिए। इसके पीछे उनका तर्क है कि अगर कारपोरेट आय मजबूत बनी रहती है तो आगे और तेजी की संभावना है।

स्टॉक मार्केट के लिए सबसे बुरा दौर बीत चुका है: रामदेव अग्रवाल

सोमवार को भारतीय शेयर बाजारों के दो महीने के उच्चतम स्तर पर पहुंचने के बाद मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड के चेयरमैन और सह-संस्थापक रामदेव अग्रवाल ने कहा कि अब स्टाक मार्केट के लिए सबसे बुरा दौर बीत चुका है और अच्छे दिन वापस आ गए हैं। अग्रवाल ने कहा कि हाल ही में आए सुधार के बाद, शेयर बाजार आखिरकार स्थिर हो रहा है और सुधार और वृद्धि के दौर के लिए तैयार है।

उन्होंने कहा कि सकारात्मक वैश्विक और घरेलू कारणों के चलते भारतीय शेयर बाजार में तेज उछाल देखा गया। पिछले एक सप्ताह में निफ्टी और सेंसेक्स में पांच प्रतिशत से ज्यादा की तेजी दर्ज की गई है। हालिया तेजी में मिडकैप और स्मालकैप शेयरों का सबसे ज्यादा योगदान रहा।

ब्रोकरेज फर्म ने सुझाव दिया कि निवेशकों को अगले छह महीनों में चरणबद्ध तरीके से मिड और स्मालकैप शेयरों में निवेश करते हुए एकमुश्त निवेश के माध्यम से लार्ज-कैप और हाइब्रिड फंड में निवेश करना जारी रखना चाहिए। रिपोर्ट में कहा गया है कि खपत को बढ़ावा देने के लिए हाल ही में सरकार द्वारा उठाए गए कदमों से आर्थिक विकास को समर्थन मिलने की उम्मीद है।

क्या मैच्योरिटी से पहले निकाले जा सकते है पैसे? जानिए नियम

महिला सम्मान सेविंग स्कीम खास तौर पर महिलाओं के लिए डिजाइन की गई है। इसके जरिए महिला निवेशक अच्छा खासा फंड तैयार कर सकती है। इस स्कीम की अवधि 2 साल की है। लेकिन कभी-कभी ऐसा भी हो सकता है कि निवेश किया गया अमाउंट हमें इमरजेंसी के लिए चाहिए हो तो क्या अवधि पूरी होने से पहले पैसे निकाले जा सकते हैं?

नई दिल्ली। पोस्ट ऑफिस एक सुरक्षित प्लेटफॉर्म माना जाता है। इसमें पैसा डूबने का खतरा नहीं रहता। पोस्ट ऑफिस के तहत कई तरह की स्कीम्स ऑफर की जाती है। इनमें से ही एक है, पोस्ट ऑफिस महिला सम्मान बचत योजना (Mahila Samman Saving Certificate)।

इस स्कीम की अवधि आमतौर पर 2 साल की होती है। लेकिन हो सकता है, इमरजेंसी पड़ने पर हमें अवधि पूरी होने से पहले पैसे निकालने पड़ जाए। तो ऐसे में सवाल उठता है कि क्या एमएसएससी के तहत अवधि पूरी होने से पहले पैसे निकाले जा सकते हैं।

क्या मैच्योरिटी से पहले पैसे निकाल सकते हैं?

पोस्ट ऑफिस की ऑफिशियल वेबसाइट के अनुसार अगर महिला निवेशक चाहे तो योजना की अवधि पूरी होने से पहले पैसे निकाल सकती है। हलांकि इसे लेकर भी कुछ नियम है। कोई भी निवेशक महिला सम्मान बचत योजना के तहत 1 साल बाद निवेश करने के बाद बीच में ही पैसे निकाल सकते हैं।

लेकिन आप सिर्फ 40 फीसदी तक ही राशि निकाल सकते हैं। ये 40 फीसदी पैसे कुल अमाउंट पर कैलकुलेट होता है। जिनमें एक साल एक अंतराल में मिलने वाला ब्याज भी शामिल होता है।

उदाहरण के लिए- मान लीजिए कोई निवेशक महिला सम्मान बचत योजना के तहत 2 लाख रुपये निवेश करता है, तो एक साल के भीतर उसके खाते में 2,15,427 रुपये बन जाएंगे। इन्हीं 2,15,427 पर 40 फीसदी के हिसाब से निकासी रकम कैलकुलेट की जाती है। जिसका मतलब हुआ कि खाते में 2,15,427 होने पर निवेशक लगभग 86 हजार रुपये ही निकाल पाएंगे।

वहीं अगर निवेशक को कोई गंभीर बीमारी हो, तो ऐसे में पैसे निकाल सकते हैं, लेकिन ऐसा करने पर आपको प्रीसिपल अमाउंट पर ही रिटर्न मिलता है।

इसके साथ ही निवेशक 6 महीने बाद भी पैसा निकाल सकते हैं, लेकिन ऐसे में 2 फीसदी कम रिटर्न मिलता है।

कैसे निकाले पैसे?

अगर आप स्कीम की अवधि पूरी होने से पहले पैसे निकालना चाहते हैं, तो आपको सबसे पहले अपने पास स्थित पोस्ट ऑफिस में जाकर एक निकासी अनुरोध फॉर्म भरना होगा। इसके साथ ही एक पहचान पत्र जमा करना होगा।

कितना मिलता है रिटर्न?

महिला सम्मान सेविंग स्कीम में आपको 7.5 फीसदी तक रिटर्न मिल जाता है। ये ब्याज तिमाही के हिसाब से कैलकुलेट किया जाता है। स्कीम के तहत मिलने वाला रिटर्न और प्रीसिपल अमाउंट आपको अवधि पूरी होने के बाद ही मिलता है।

वहीं इस स्कीम को 1000 रुपये के साथ शुरू किया जा सकता है। वहीं अधिकतम आप इसमें 2 लाख रुपये तक निवेश कर सकते हैं।

सैमसंग दे रहा 11,000 रुपये का डिस्काउंट, 200MP कैमरा वाले स्मार्टफोन को सस्ते में खरीदने का मौका

सैमसंग गलैक्सी एस 25 अल्ट्रा स्मार्टफोन पर तगड़ा डिस्काउंट मिल रहा है। सैमसंग का यह फोन इस साल की शुरुआत में ही लॉन्च किया गया था। एचडीएफसी बैंक के क्रेडिट कार्ड से फुल पेमेंट करने पर 11 हजार रुपये और ईएमआई पेमेंट पर 9000 रुपये का डिस्काउंट मिल रहा है। यहां हम सैमसंग के इस फोन मिलने वाले ऑफर के बारे में डिटेल जानकारी दे रहे हैं।

नई दिल्ली। Samsung Galaxy S25 Ultra स्मार्टफोन भारत में साल की शुरुआत में लॉन्च हुआ था। सैमसंग का यह स्मार्टफोन पिछले साल के Galaxy S24 Ultra का सक्सेसर है। सैमसंग का लेटेस्ट फ्लैगशिप स्मार्टफोन क्वालकॉम के Snapdragon 8 Elite चिपसेट के साथ पेश किया गया है, जो One UI 7 कस्टम स्किन पर रन करता है। फिलहाल Samsung Galaxy S25 Ultra स्मार्टफोन पर 11 हजार रुपये का बैंक डिस्काउंट मिल रहा है। यहां हम आपको सैमसंग के इस स्मार्टफोन पर मिल रही डील के बारे में डिटेल में जानकारी दे रहे हैं।

Samsung Galaxy S25 Ultra बैंक ऑफर्स

Samsung Galaxy S25 Ultra स्मार्टफोन का बेस वेरिएंट 12GB रैम और 256GB स्टोरेज के साथ आता है, जिसे 1,29,999 रुपये की शुरुआती कीमत में लॉन्च किया गया है। इस फोन का दूसरा वेरिएंट 512 जीबी स्टोरेज के साथ 1,41,999 रुपये और टॉप वेरिएंट 1TB स्टोरेज के साथ 1,65,999 रुपये की कीमत में आता है।

सैमसंग के इस फोन पर एचडीएफसी बैंक के क्रेडिट कार्ड से फुल पेमेंट करने पर 11 हजार रुपये का डिस्काउंट मिल रहा है। वहीं, ईएमआई पेमेंट पर 9000 रुपये का डिस्काउंट मिल रहा है।

इस बैंक डिस्काउंट के साथ सैमसंग के इस फोन को 1,18,999 रुपये की शुरुआती कीमत में खरीदा जा सकता है। इस ऑफर का बेनिफिट सैमसंग की ऑफिशियल वेबसाइट, अमेजन, रिलायंस डिजिटल और फ्लिपकार्ट से उठाया जा सकता है।

Samsung Galaxy S25 Ultra स्मार्टफोन Titanium Silverblue, Titanium GrayTitanium Black, और Titanium Whitesilver कलर ऑप्शन में बिक्री के लिए अपलब्ध है। इसके साथ ही सैमसंग की वेबसाइट पर तीन स्पेशल कलर - Titanium Jetblack, Titanium Jadegreen, और Titanium Pinkgold भी उपलब्ध है।

Samsung Galaxy S25 Ultra के स्पेसिफिकेशन

सैमसंग के इस फोन में 6.9-इंच का Dynamic LTPO AMOLED डिस्प्ले दिया गया है, जिसका रिफ्रेश रेट 120Hz और पीक ब्राइटनेस 2600 निट्स है। इस डिस्प्ले में Corning Gorilla Armor 2 का प्रोटेक्शन मिलता है। सैमसंग का यह फोन क्वालकॉम के फ्लैगशिप Snapdragon 8 Elite चिपसेट के साथ बाजार में उतारा गया है। सैमसंग के Galaxy S25 Ultra स्मार्टफो में कई एआई फीचर्स मिलते हैं।

इस फोन में क्वाड रियर कैमरा सेटअप मिलता है, जिसका प्राइमरी कैमरा 200MP का है, जिसके साथ 50MP का अल्ट्रावाइड कैमरा, 50MP टेलीफोटो कैमरा और 10MP सेकेंडरी टेलीफोटो कैमरा सेंसर दिया गया है। सेल्फी और वीडियो कॉलिंग के लिए इस फोन में 12MP का सेल्फी कैमरा दिया गया है। इसके साथ ही फोन में 5000mAh की बैटरी और 45W फास्ट चार्जिंग सपोर्ट दिया गया है।

संस्कारशाला : बड़ों की गरिमा और विनम्रता का महत्व

प्रिय समाज के अग्रणी, वरिष्ठजन और जागरूक नागरिकों,

बड़ा होना केवल उम्र, पद, या डिग्रियों से नहीं होता, बल्कि बड़ा बने रहना असली परीक्षा है। जीवन में सफलता और ऊँचाई प्राप्त करना गर्व की बात होती है, लेकिन उस ऊँचाई पर रहकर विनम्रता बनाए रखना ही सच्ची महानता की निशानी है।

हम बचपन में पढ़ते थे— ऊँची दुकान, फीका पकवान— और आज यह कहावत कई स्थानों पर चरितार्थ होती दिखती है। कई लोग ऊँचे पदों पर पहुँचकर, बड़ी डिग्रियाँ लेकर, अथवा सामाजिक रुतबे के साथ अहंकार को अपना लेते हैं। लेकिन क्या यही सफलता है? क्या यह उस शिक्षा का परिणाम है, जो हमें विनम्रता और मानवीय मूल्यों की सीख देती है?

₹चाहे कितनी भी ऊँचाई प्राप्त कर लो,
चाहे कितनी भी बड़ी डिग्री हासिल कर लो,
अगर बोलने की तमीज़ और इंसानियत नहीं सीखी,
तो वह इंसान अनपढ़ के बराबर है।₹

बड़ों को छोटी हरकतें शोभा नहीं देतीं। समाज हमसे सीखता है, आने वाली पीढ़ियाँ हमारे आचरण को देखकर खुद को ढालती हैं। यदि हम ही अपने व्यवहार में कठोरता, अभिमान और असंवेदनशीलता दिखाएँगे, तो हम किस तरह की पीढ़ी का निर्माण करेंगे?

नेतृत्व का अर्थ केवल आगे बढ़ना नहीं, बल्कि दूसरों को साथ लेकर चलना है।

सम्मान पाने का अधिकार तभी बनता है, जब हम दूसरों को सम्मान देना जानते हों।

संस्कारशाला का यही उद्देश्य है कि हम न केवल ज्ञान अर्जित करें, बल्कि जीवन मूल्यों को आत्मसात करें। बड़ा बनने का असली अर्थ केवल सफलता या प्रसिद्धि नहीं है, बल्कि विनम्रता और कृतज्ञता को अपनाना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

तो आइए, हम Attitude नहीं, Gratitude दिखाएँ और अपने बड़प्पन को सच्चे अर्थों में सार्थक करें।

सादर,
डॉ. अंकुर शरण

जो अपनों का मान बढ़ाए, वही जग में मान पाए।

-प्रियंका सौरभ

संघर्षों में डटे रहो तुम,
हाथ अपनों का थाम लो,
गैरों के आगे क्यों झुकना,
सम्मान अपना जान लो।

(2)
जीवन की राह कठिन सही,
पर हिम्मत को मत छोड़ो,
जो अपने सच्चे साथ खड़े,
उनसे नाता मत तोड़ो।

(3)
आंधी आए, तूफां आए,
डरकर पीछे ना हटो,
जब अपने संग खड़े रहें,
तो तुम भी साहस से डटो।

(4)
अपनों की छाँव सुकून दे,
जहाँ स्नेह का बसेरा हो,
दुनिया के छल से बच जाना,
बस प्यार भरा सवेरा हो।

(5)
सम्मान वही जो घर में मिले,
जो अपनों का मान बढ़ाए,
गैरों के आगे सिर न झुके,
परिवार का साथ निभाए।

चलो संग-संग, कदम बढ़ाएँ,
मुश्किलों से ना घबराएँ,
जो अपनों का मान बढ़ाए,
वही जग में मान पाए!

प्रियंका सौरभ

खरसावां विधायक ने सदन में उठाया विश्वप्रसिद्ध सरायकेला छऊ पर आवाज़

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड-झारखंड

रांची, खरसावां विधायक दशरथ गगराई ने आज सरायकेला छऊ नृत्य व कला केंद्र की बदहाल स्थिति पर झारखंड विधानसभा में अध्यक्ष का ध्यानाकर्षण किया है। इसके साथ पांच रिक्त पदों पर भी शीघ्र योग्य मर्मज्ञ लोगों को बहाल करने हेतु विधानसभा में आवाज उठाया है ।सनद रहे कि इस विश्वप्रसिद्ध उत्कलीय कला विगत दो वर्षों से मृत प्रायः एक आशा का इंतजार कर है ।

कभी राजमहल मे मां पाउडी के आंगन में विभिन्न युद्ध से निकले कलात्मक अखाड़ों से आकर जन्म लिया फिर 1938 में सर्वप्रथम किसी देशी रियासत के राजकुमारों के साथ नृत्य कला से देश का नाम रोशन करने वाला यही सरायकेला की छऊ कला ही रही है । झारखंड को छह छह पद्मश्री (एक अन्य कुल सात) , दर्जनभर संगीत नाटक अकादमी अवार्सड्स समेत करीब 50 जुनियर ,सिनियर शोधकर्ता देने वाला इस विश्व प्रसिद्ध छ ऊ नृत्य जीर्णोद्धार हेतु किये गये प्रयास को स्थानीय मुलवासी ओडिया जनमानस खंरसावा विधायक दसरथ गगराई के अब तारिफ के पुल बांध रहे हैं ।

विगत 1990 से इस अद्वितीय कला को तहस नहस करने हेतु जो षड्यंत्र चला वह ओड़िया भाषा की तरह उनकी संस्कृति को संरक्षण प्रदान के नाम पर घोर विनाशकारी कदम था । अलबत्ता पूर्व डी एम चाईबासा सजल चक्रवर्ती को छऊ के मोह में बांधना एक साज़िश था । उनके बाद उसी संस्था के पदेन अध्यक्ष रहे ईमानदार डी सी अमीत खरे ने यहां आठ अखाड़ों के इतिहास को लेकर आठ कमरा निर्माण कर जब आगे बढ़े तब अचानक उनकी तबादला पशुपालन घोटाला उद्भेदन के बाद कर दी गयी । फिर झारखंड गठन के बाद प्रथम उपायुक्त बंदना डाडेल ने इसे संवारना चाहा परन्तु हो नहीं सका । उसके बाद इस अनूठी कला पकाओ खाओ बन कर रह गयी । इसके पीछे तत्कालीन निदेशक द्वारा योग्य लोगों को दरकिनार कर अपना उल्लू सीधा करना मुख्य उद्देश्य रहा । इस भ्रष्ट निदेशक के साहारे अफसर साही हावी होने के कारण छऊ के नाम पर मुम्बईया कलाकार मोटी रकम बटोरने आने लगे, अनेक कृत्य हुए । अन्ततः स्थिति ऐसी हुई कि ओड़िआ भाषा की तरह छऊ संस्कृति का लगभग अंत हो गया । आज भी गांव गांव में छऊ होता है पर सरायकेला का यह राजकीय संस्थान बदनाम का गट्ठर को तीस सालों से ढोता आया है ।

इन्ही सब कारणों के बीच खरसावां विधायक ने जो काम कर दिखाया है वह चहुंओर वाहवाही हो रही है । देखना दिलचस्प होगा कि सरकार किस और करवटें लेगी आने वाले समय मे ।

व्यक्तिगत डायरी लिखना कहां तक उचित है, स्वयं सोचें....

अपनी डायरी लिखना एक बहुत ही महत्वपूर्ण और संवेदनशील विषय है। डायरी वास्तव में एक चुनौती है, जो हमें अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए प्रेरित करती है। यह एक भरोसा है, जो हमें अपने आप को समझने और अपने जीवन को बेहतर बनाने में मदद करती है।

डायरी के अल्फ़ाज़ वास्तव में अनमोल हो सकते हैं।जो हमारे दिल की गहराइयों से निकलते हैं और हमें अपने आप को समझने में मदद करते हैं।"डायरी चुनौती है, डायरी भरोसा है डायरी के अल्फ़ाज़ अनमोल होते हैं।

डायरी वास्तव में हमारा एक सुकून है, जहां हम अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त कर सकते हैं। यह हमारे दिल की गहराइयों से निकलने वाली एक स्वयं की आत्म अभिव्यक्ति है, जो हमें अपने आप को समझने और अपने जीवन को बेहतर बनाने में मदद करती है।डायरी लिखना न केवल हमारे विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का एक तरीका है, बल्कि यह हमारे जीवन की एक स्पष्ट तस्वीर भी है। यह हमें अपने जीवन की घटनाओं, हमारे निर्णयों और हमारे परिवर्तनों को समझने में मदद करती है।ये बहुत बड़ी बहुत सच्चाई होती है।

"डायरी जो आप लिखते हैं या लिखना चाहते हैं वो सिर्फ़ डायरी नहीं है वो आपके जज़्बात हैं, वो आपके दिलका आयना हैं।

निजी डायरी में अपने विचारों और अनुभवों को लिखना एक स्वाभाविक और सामान्य बात है, लेकिन जब इसमें प्रेम संबंधों की जानकारी शामिल होती है, तो यह एक जटिल मुद्दा बन सकता है।

यदि आपकी निजी डायरी में प्रेम संबंधों की जानकारी है, तो यह आपके परिवार और रिश्तेदारों के लिए एक समस्या बन सकती है, खासकर यदि वे इसे पढ़ लेते हैं और इसके बारे में गलत धारणा बना लेते हैं।

इसलिए, यह सलाह दी जा सकती है कि यदि आपकी निजी डायरी में प्रेम संबंधों की जानकारी है, तो,

अपनी निजी डायरी को एक सुरक्षित स्थान पर रखें जहां कोई और इसे पढ़ न सके।

यदि आप अपने प्रेम संबंधों के बारे में लिखना चाहते हैं, तो कूटभाषा का उपयोग करें ताकि कोई और इसे समझ न सके।

अपने प्रेम संबंधों के बारे में विवरण न दें जो आपके परिवार और रिश्तेदारों के लिए समस्या बन सकते हैं। यदि आपको लगता है कि आपके प्रेम संबंधों के बारे में आपके परिवार को पता होना चाहिए, तो उनसे खुलकर बात करें और उन्हें समझाएं कि आपके लिए यह क्या मतलब रखता है।यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि आपकी निजी डायरी आपकी व्यक्तिगत संपत्ति है, और आपको इसके साथ जो चाहे करने की आजादी है। लेकिन, यह भी महत्वपूर्ण है कि आप अपने परिवार और रिश्तेदारों की भावनाओं का सम्मान करें और उनकी मान प्रतिष्ठा ध्यान में रखें।डायरी के पन्ने व्यक्ति के विचारों, भावनाओं, और अनुभवों का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं। यह व्यक्ति की संपत्ति है, और इसको सुरक्षा तरीके से संजोना चाहिए।

डायरी में लिखे गए विचार और अनुभव व्यक्ति के जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं को दर्शाते हैं। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व, उसके सपनों, और उसके लक्ष्यों को समझने में मदद करता है।

डायरी को सुरक्षा तरीके से संजोने के लिए कुछ सुझाव यह हैं, अपनी डायरी को लॉक करें ताकि कोई और इसे खोल न सके।अपनी डायरी को डिजिट्ल रूप में सुरक्षित करें ताकि यह हमेशा के लिए सुरक्षित रहे। अपनी डायरी को अपने परिवार के सदस्यों को न बताएं ताकि वे इसके बारे में जान न सकें।

अपनी डायरी को अपने जीवन के अंत तक सुरक्षित रखें ताकि यह आपके जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं हमेशा के लिए सुरक्षित रह सकें।

अपनी डायरी या संस्मरण लिखने के लिए यहाँ कुछ सलाह फ़ायदे मंद हो सकती है।

डायरी लिखने के लिए एक निश्चित समय और स्थान तय करें।

अपने विचारों और भावनाओं को ईमानदारी से लिखें।अपने अनुभवों और घटनाओं को विस्तार से लिखें।

अपनी भावनाओं को लिखने से न हिचकिचाएं।

अपने संस्मरण के लिए एक विषय चुनें जो आपके जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है।अपने संस्मरण के लिए एक योजना बनाएं जिसमें आपके जीवन के महत्वपूर्ण घटनाएं और अनुभव शामिल हों।यदि संभव हो,अपने संस्मरण को संपादित करें ताकि वह पाठकों के लिए आकर्षक और समझने योग्य हों।

अपने संस्मरण को प्रकाशन के लिए तैयार करें और उसे प्रकाशकों को भेजें।

अपने लेखन का आनंद लें और उसे एक मज़ेदार अनुभव बनाएं।

अपने लेखन को निरंतर बनाए रखें और उसे समय-समय पर अपडेट करें।

अपने पाठकों के लिए लिखें और उनकी रुचियों और ज़रूरतों को ध्यान में रखें।

अपने लेखन में सुधार करने के लिए सीखते रहें और नए विचारों और तकनीकों को अपनाएं।

निजी डायरी लिखना एक व्यक्तिगत पसंद है। यह आपके व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पहलू हो सकता है।निजी डायरी लिखने से आप अपने विचारों, भावनाओं, और अनुभवों को समझने में मदद पा सकते हैं।निजी डायरी लिखने से आप अपने तनाव और चिंताओं को कम कर सकते हैं।निजी डायरी लिखने से आप अपने जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं को याद रखने में मदद पा सकते हैं।निजी डायरी लिखने से आप अपने लेखन कौशल में सुधार कर सकते हैं।

हालांकि, निजी डायरी लिखने के कुछ नुकसान भी हो सकते हैं।

यदि आपकी निजी डायरी किसी और के हाथ में पड़ जाती है, तो यह आपकी गोपनीयता की समस्या बन सकती है।

निजी डायरी लिखने से आप अत्यधिक आत्म-विश्लेषण में पड़ सकते हैं, जो आपके मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है।यदि आप अपनी निजी डायरी लिखने में बहुत अधिक समय व्यतीत करते हैं, तो यह आपके अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के लिए समय की बर्बादी बन सकती है।

इसलिए, निजी डायरी लिखना सही या गलत नहीं है, बल्कि यह आपके व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पहलू हो सकता है, यदि आप इसे संतुलित और सावधानी से लिखते हैं।

डायरी लिखना वाकई एक चुनौती है जो हमें अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए प्रेरित करती है।

डायरी एक भरोसा है जो हमें अपने आप को समझने और अपने जीवन को बेहतर बनाने में मदद करती है।

डायरी के अल्फाज अनमोल हैं जो हमारे दिल की गहराइयों से निकलते हैं और हमें अपने आप को समझने में मदद करते हैं। जहां हम अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त कर सकते हैं।डायरी हमें अपनी भावनाओं को संचार करने में मदद करती है।

अपनी डायरी में रंगीन पेन और स्टिकर्स का उपयोग करके आप अपने विचारों और भावनाओं को और भी रोचक तरीके से व्यक्त कर सकते हैं।

अपनी डायरी में चित्र और तस्वीरें जोड़कर आप अपने अनुभवों और यादों को और भी जीवंत बना सकते हैं।

अपनी डायरी में विभिन्न फ़ॉन्ट और शैलियों का उपयोग करके आप अपने विचारों और भावनाओं को और भी रोचक तरीके से व्यक्त कर सकते हैं।

अपनी डायरी में कविताएँ और गीत लिखकर आप अपने विचारों और भावनाओं को और भी रोचक तरीके से व्यक्त कर सकते हैं।

अपनी डायरी में यादें और अनुभव साझा करके आप अपने जीवन की घटनाओं को और भी जीवंत बना सकते हैं।

अपनी डायरी में लक्ष्य और सपने लिखकर आप अपने जीवन की दिशा को और भी स्पष्ट बना सकते हैं।

अपनी डायरी में प्रतिबिंब और आत्म-विश्लेषण करके आप अपने जीवन की घटनाओं को और भी गहराई से समझ सकते हैं।

देवासी समाज कोतनूर भवन में देवासी समाज कर्नाटक की 12 संस्थाओं की आम सभा हुई आयोजित

बेंगलूरुः दिनांक २५-३-२०२५ को देवासी समाज कोतनूर समाज भवन में राजायोगी संध्यानाथजी व योगी लक्ष्मणनाथजी के सानिध्य में देवासी समाज कर्नाटक की १२ संस्थाओं की आम सभा रखी गई इसमें एक सामूहिक कार्यकारिणी का चयन करके साल में एक बार सभी संस्थाओं का दिपावली पर स्नेह मिलन का आयोजन किया जाये यह सभी संस्थाओं ने सहर्ष सहमति देकर स्वीकृति प्रदान की , इसमें सभी संस्थाओं के अध्यक्ष व गणमान्य प्रबुद्ध लोगों की उपस्थिति रही ।

ढेंकनाल में सिलसिलेवार हादसे, निर्माण विभाग की लापरवाह नीति के कारण गई 3 लोगों की जान

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर : निर्माण विभाग की लापरवाह नीतियों के कारण तीन लोगों की जान चली गई। ढेंकनाल के कामाख्यानगर रेकुला में कई दुर्घटनाएं हुई हैं। निर्माण विभाग के एक कर्मचारी समेत तीन लोगों की मौत हो गई तथा एक गंभीर रूप से घायल हो गया। स्थानीय लोगों ने ढेंकनाल-कामाख्यानगर मार्ग को अवरुद्ध कर दिया है।सूत्रों के अनुसार लोक निर्माण विभाग सोमवार रात को कामाख्यानगर उप-जिला से ढेंकानाल तक मुख्य सड़क पर सड़क निर्माण कार्य कर रहा था। लेकिन वहां कोई सूचना बोर्ड या सड़क अवरोधक नहीं लगाए गए थे। परिणामस्वरूप, रेकुला में एक बाइक सड़क पर खड़े पिकअप ट्रक से टकरा गई। परिणामस्वरूप बाइक सवार की मौत हो गई। इस घटना के बाद एक अन्य कार आई और उसने पिकअप ट्रक को टक्कर मार दी। परिणामस्वरूप, परियोजना पर काम कर रहे एक श्रमिक की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई। लोक निर्माण विभाग के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी खिरोद साहू सहित एक अन्य श्रमिक गंभीर रूप से घायल हो गए। उनका स्थानांतरण कटक कर दिया गया। बाद में खिरोद की भी अस्पताल में मौत हो गई। हालांकि मृतक श्रमिकों की सही पहचान नहीं हो पाई है, लेकिन बताया जा रहा है कि एक पल्लहाडा और दूसरा मयूरभंज जिले का रहने वाला है। इसी तरह, पता चला है कि मृतक निर्माण विभाग का कर्मचारी था और स्थानीय गांव रेकुला का रहने वाला था।लोक निर्माण विभाग के लापरवाह रवैये को लेकर स्थानीय क्षेत्र में रोष व्याप्त है। गुस्साए लोगों ने दुर्घटना स्थल पर सड़क जाम कर दिया है। परिणामस्वरूप, ढेंकनाल और कामाख्यानगर के बीच संचार बाधित हो गया है। कामाख्यानगर पुलिस घायलों से पूछताछ कर रही है।

इस युग के महावीर जन जन के समाधिस्थ संत आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज कहते हैं कि हर पिता के भाग्य मे बेटी नहीं होती

परिवहन विशेष न्यूज

राजा दशरथ जब अपने चारों बेटों की बारात लेकर राजा जनक के द्वार पर पहुंचे तो राजा जनक ने सम्मानपूर्वक बारात का स्वागत किया। तभी दशरथ जी ने आगे बढकर जनक जी के चरण छू लिये। जनक जी ने दशरथ जी को थाम लिया और बोले महाराज आप मुझसे बड़े है और तो और वरपक्ष वाले है ये उल्टी गंगा कैसे बहा रहे हैं .....? इस पर दशरथ जी ने बड़ी सुंदर बात कही, महाराज आप दाता हो कन्यादान कर रहे हो ,मैं तो याचक हूँ आपके द्वार कन्या लेने आया हूँ,, अब आप ही बताओ दाता और याचक में बड़ा कौन है , ? यह सुनकर जनक जी की आंखों मे अश्रु धारा बह निकली..... ।भाग्यशाली है वो लोग जिनके घर में होतीं है बेटियाँ, हर बेटी के भाग्य मे पिता होता है लेकिन हर पिता के भाग्य मे बेटी नहीं होती ।। बेटी हमारी ही नही वह दो परिवार का मिलाप करती है दोनो परिवारों के संस्कार से अपनी बुद्धिमत्ता से वह नये युग मे साकारात्मकता का प्रकाश फैलाती है ,बेटी हर युग मे प्रथम थी और भविष्य मे भी अव्वल रहेगी , बेटीयों का आप के यहाँ जन्म लेना आप का पुण्य उदय है, ।इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए आचार्य श्री विद्यासागर जी ने प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विघापीठ की स्थापना की थी ।जो आज पूरे भारत में अपनी आलोकित ऊर्जा से भरपूर प्रकाश फैला रही है। जबलपुर में तो यह पहले ही थी। हमारे इन्दौर में भी इस ज्ञानोदय विघापीठ से प्रतिभाओं को तराशने हेतु सभी लगें हुए है। दिगंबर जैन समाज की बेटियों को ऊंची उड़ान भरने हेतु यह उपक्रम बहुत ही प्रभावी है। तभी तो वह सभी बेटियां आगे बढ़ रही है। जहां संस्कृति संस्कार व धर्म समाज और राष्ट्र के लिए ज्ञान दान दिया जाता है। हथकरघा गायन वादन नृत्य संगीत कला के साथ धर्म की शिक्षा के साथ नैतिक शिक्षा भी दी जाती है। इन्दौर में रेवती रेंज में प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विघापीठ पूरे भारत में अपने गुरुजनों दीदीयो व भैय्या जी के साथ बड़े बाबा व छोटे बाबा दोनों के आशीर्वाद से अपना यशोगान करें ।यह बहुत उत्कृष्ट उपक्रम है धर्म व शिक्षा के लिए जहां बेटियों का भविष्य उज्जवल होगा।

हथकरघा

प्रेरणादायक पल

प्रेषक गुरुभक्त स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान जबरी बाग़ नसिया जी इन्दौर

जीवन सादा, तनाव आधा...!

ये जीवन जितना सादा होगा,
तनाव उतना ही आधा होगा।
संबंधों का एक ऐसा ही वृक्ष है,
भावनाओं का ये खिला पुष्प है।
इसके आगे कोई भी झुक जाता,
स्नेह बंधन यहाँ मुखरित पाता।

ये जीवन जितना सादा होगा,
तनाव उतना ही आधा होगा।
इस बंधन को कर दो अंकुरित,
इसे शब्दों से कर दों प्रचुरित।
ना रखों मन में कोई दुर्भावना,
सदा रखों रिश्ते में सद्-भावना।

ये जीवन जितना सादा होगा,
तनाव उतना ही आधा होगा।
नहीं है जीवन कभी-भी सरल,
कम होता जा रहा है अविरल।
इसे 'जी' लो, रस को 'पी' लो,
टूटे रिश्तें तो धागे में पिरों लो।

संजय एम तराणेकर

देवासी समाज कोतनूर भवन में देवासी समाज कर्नाटक की 12 संस्थाओं की आम सभा हुई आयोजित

बेंगलूरुः दिनांक 25-3-2025 को देवासी समाज कोतनूर समाज भवन में राजायोगी संध्यानाथजी व योगी लक्ष्मणनाथजी के सानिध्य में देवासी समाज कर्नाटक की १२ संस्थाओं की आम सभा रखी गई इसमें एक सामूहिक कार्यकारिणी का चयन करके साल में एक बार सभी संस्थाओं का दिपावली पर स्नेह मिलन का आयोजन किया जाये यह सभी संस्थाओं ने सहर्ष सहमति देकर स्वीकृति प्रदान की , इसमें सभी संस्थाओं के अध्यक्ष, सचिव, कार्यकारिणी व गणमान्य प्रबुद्ध लोगों की उपस्थिति रही ।

विपक्षी दल जनता की आवाज को बुलंद कर रहे हैं, सदन चलाना सरकार की जिम्मेदारी:बिजेड़ी बिधायक अरुण साहू

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: भाजपा के पास किसी भी सवाल का जवाब नहीं है। विपक्ष जहां लोगों की आवाज को तेज कर रहा है, वहीं वे कह रहे हैं कि विपक्ष सदन नहीं चला रहा है। लेकिन सदन चलाने की जिम्मेदारी सरकार की है। जब सरकार ने हमारी बात नहीं सुनी तो हमने विरोध प्रदर्शन किया और गेट के सामने बैठ गए। बीजद विधायक अरुण साहू ने पूछा, अगर सरकार नहीं सुनेगी तो विपक्ष घर क्यों जाएगा?अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) की जनसंख्या 94% है। यदि उन्हें यह अधिकार नहीं दिया गया तो उन्हें सरकारी भवन में प्रवेश करने का कोई अधिकार नहीं है। तकनीकी शिक्षा में केवल 20% आरक्षण। हालांकि, उन्होंने सवाल उठाया कि क्या ओबीसी के लिए शून्य आरक्षण स्वागत योग्य है। यदि जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री ओबीसी, एससी और एसटी आरक्षण का स्वागत करते हैं, तो ओडिशा बिना कुछ किए एक बाल सरकार बनकर रह जाएगा। आइए हम ऐसी सरकार बनें जो अतीत से सीखती हो। जितना संभव हो उतनी जानकारी प्रदान करें। सरकार का कहना है कि वह बातचीत के लिए तैयार है। लेकिन ऐसा मत करो. चर्चा करना सरकार की जिम्मेदारी है। लेकिन चुनाव जीतने के लिए झूठ बोलकर उन्होंने लोगों का विश्वास खो दिया है। जब वे मुख्यमंत्री थे, तो उन्होंने 2021 कोविड महामारी के दौरान जाति आधारित जनगणना के लिए केंद्र को पत्र लिखा था। सरकार ने कुंभ मेले में 65 करोड़ लोगों की गलत गिनती की। तो फिर वे जातीय जनगणना क्यों नहीं करा रहे हैं? इससे सामाजिक समानता आएगी। उन्हें डर है कि उनका मुंह खुल जाएगा। सरकार ने जन कल्याणकारी कार्यक्रम नहीं चलाए हैं। केन्द्र सरकार पीछे हट रही है। केबीके अनुदान में कटौती , बहस के लिए आओ । विधायक अरुण साहू ने कहा कि सत्ता पक्ष हार के डर से सत्ता से बेदखल होने की कोशिश कर रहा है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023